संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ जून २०११
वर्ष : २० अंक : १२
(निरंतर अंक : २२२)

गुरुपूर्णिमा विशेषांक

भगवत्पाद सद्गुरु स्वामी
श्री श्री लीलाशाहजी महाराज

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

ॐकार की १९ शक्तियाँ

दान शक्ति
क्रिया शक्ति
दीप्ति शक्ति
इच्छित अवति शक्ति
वाप्ति शक्ति
आलिंगन शक्ति
स्वाम्यर्थ शक्ति
हिंसा शक्ति
प्रवेश अवति शक्ति
याचन शक्ति
भोग शक्ति
अवगम शक्ति
वृद्धि शक्ति
तृप्ति शक्ति
गति शक्ति
कांति शक्ति
प्रीति शक्ति
रक्षण शक्ति
श्रवण शक्ति

सारे शास्त्र-स्मृतियों का मूल हैं वेद। वेदों का मूल गायत्री है और गायत्री का मूल है ॐकार। ॐकार से गायत्री, गायत्री से वैदिक ज्ञान और उससे शास्त्र और सामाजिक प्रवृत्तियों की खोज हुई।

पूज्य बापूजी के पावन अवतरण-दिवस पर बही सेवा-धारा

जगह-जगह हुए भण्डारे, अन्न, वस्त्र, हॉट केस (गर्म टिफिन) का वितरण।
गरीब हुए निहाल, सेवा का अवसर पाकर कर्मयोगी साधक हुए खुशहाल।

धनबाद (झारखण्ड) | पुणे (महा.) | गोधरा (गुज.)

पानीपत (हरि.) | बेड़ो-राँची (झारखण्ड) | भावनगर (गुज.)

बुलंदशहर (उ.प्र.) | डाल्टनगंज, जि. पलामू (झारखण्ड) | अजमेर (राज.)

वैशाली (बिहार) | निवाई, जि. टोंक (राज.) | रायपुर (छ.ग.)

स्थानाभाव के कारण सभी झाँकियाँ नहीं दे पा रहे हैं। आश्रम के विभिन्न सेवाकार्यों की विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org देखें।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २० अंक : १२
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २२२)
१ जून २०११ मूल्य : रु. ६-००
ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. २०६८

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	रु. ६०/-	रु. ७०/-
द्विवार्षिक	रु. १००/-	रु. १३५/-
पंचवार्षिक	रु. २२५/-	रु. ३२५/-
आजीवन	रु. ५००/-	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	रु. ३००/-	US $ 20
द्विवार्षिक	रु. ६००/-	US $ 40
पंचवार्षिक	रु. १५००/-	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.). फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
: www.rishiprasad.org

इस अंक में...

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	Zee Jagran	दिशा	संस्कार	care WORLD	सत्संग टी.वी.	JUS one (अमेरिका)	Ashram LIVE
रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोप. २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)	रोज सुबह ८-४० बजे	रोज दोपहर २-३० बजे	रोज दोपहर २-०० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	सोम से शुक्र शाम ७ बजे शनि-रवि शाम ७-३० बजे	आश्रम इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण

सजीव प्रसारण के समय नित्य के कार्यक्रम प्रसारित नहीं होते।

✻ **A2Z** चैनल रिलायंस के 'बिग टीवी' पर भी उपलब्ध है। चैनल नं. **425** ✻ **Zee Zagran** चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. **750** ✻ दिशा चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. **757** ✻ **care** WORLD चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. **770** ✻ **JUS one** चैनल 'डिश टीवी (अमेरिका)' पर उपलब्ध है। चैनल नं. **581** ✻ इंटरनेट पर **www.ashram.org/live** लिंक पर आश्रम इंटरनेट टी.वी. उपलब्ध है।

अपना ईश्वरीय वैभव जगाने का पर्व : गुरुपूर्णिमा

(पूज्यश्री की दिव्य अमृतवाणी)

गुरुपूर्णिमा का दूसरा नाम है व्यासपूर्णिमा। वेद के गूढ़ रहस्यों का विभाग करनेवाले कृष्णद्वैपायन की याद में यह गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया जाता है। भगवान वेदव्यास ने बहुत कुछ दिया मानव-जाति को। विश्व में जो भी ग्रंथ हैं, जो भी मत, मजहब, पंथ हैं उनमें अगर कोई ऊँची बात है, बड़ी बात है तो व्यासजी का ही प्रसाद है।

व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।

एक लाख श्लोकों का ग्रंथ 'महाभारत' रचा उन महापुरुष ने और यह दावा किया कि जो महाभारत में है वही और जगह है व जो महाभारत में नहीं है वह दूसरे ग्रंथों में नहीं है : **यन्न भारते तन्न भारते।** चुनौती दे दी और आज तक उनकी चुनौती को कोई स्वीकार नहीं कर सका। ऐसे व्यासजी, इतने दिव्य दृष्टिसम्पन्न थे कि पद-पद पर पांडवों को बताते कि अब ऐसा होगा और कौरवों को भी बताते कि तुम ऐसा न करो। व्यासजी का दिव्य ज्ञान और आभा देखकर उनके द्वारा ध्यानावस्था में बोले गये 'महाभारत' के श्लोकों का लेखनकार्य करने के लिए गणपतिजी राजी हो गये। कैसे दिव्य आर्षद्रष्टा पुरुष थे!

ऐसे वेदव्यासजी को सारे ऋषियों और देवताओं ने खूब-खूब प्रार्थना की कि हर देव का अपना तिथि-त्यौहार होता है। शिवजी के भक्तों के लिए सोमवार और शिवरात्रि है, हनुमानजी के भक्तों के लिए मंगलवार व शनिवार तथा हनुमान जयंती है, श्रीकृष्ण के भक्तों के लिए जन्माष्टमी है, रामजी के भक्तों के लिए रामनवमी है तो आप जैसे महापुरुषों के पूजन-अभिवादन के लिए भी कोई दिन होना चाहिए। हे जाग्रत देव सद्गुरु! हम आपका पूजन और अभिवादन करके कृतज्ञ हों। कृतघ्नता के दोष से विद्या फलेगी नहीं।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः...

जैसे ब्रह्मा सृष्टि करते हैं ऐसे आप हमारे अंदर धर्म के संस्कारों की सृष्टि करते हैं, उपासना के संस्कारों की सृष्टि करते हैं, ब्रह्मज्ञान के संस्कारों की सृष्टि करते हैं। जैसे विष्णु भगवान पालन करते हैं ऐसे आप हमारे उन दिव्य गुणों का पोषण करते हैं और जैसे शिवजी प्रलय करते हैं ऐसे आप हमारी मलिन इच्छाएँ, मलिन वासनाएँ, मलिन मान्यताएँ, लघु मान्यताएँ, लघु ग्रंथियाँ क्षीण कर देते हैं, विनष्ट कर देते हैं। आप साक्षात् परब्रह्मस्वरूप हैं... तो गुरु का दिवस भी कोई होना चाहिए। गुरुभक्तों के लिए गुरुवार तय हुआ और व्यासजी ने जो विश्व का प्रथम आर्ष ग्रंथ रचा 'ब्रह्मसूत्र', उसके आरम्भ-दिवस आषाढ़ी पूर्णिमा का 'व्यासपूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा' नाम पड़ा।

तो इस दिन व्यासजी की स्मृति में 'अपने-अपने गुरु में सत्-चित्-आनंदस्वरूप ब्रह्म-परमात्मा का वास है', ऐसा सच्चा ज्ञान याद करके उनका पूजन करते हैं। गुरुपूनम पर हम तो अपने गुरुदेव को मन-ही-मन स्नान करा देते थे, मन-ही-मन गुरुदेव को वस्त्र पहना देते, मन-ही-मन तिलक करते और सफेद, सुगंधित मोगरे के फूलों की माला गुरुजी को पहनाते, फिर मन-ही-मन आरती करते। और फिर गुरुजी बैठे हैं, उनका मानसिक दर्शन करते-करते उनकी भाव-भंगिमाएँ

सुमिरन करके आनंदित होते थे, हर्षित होते थे । हम तो ऐसे व्यासपूनम मनाते थे । अपने व्यासस्वरूप गुरु के ध्यान में प्रीतिपूर्वक एकाकार... फिर मानों, गुरुजी कुछ कह रहे हैं और हम सुन रहे हैं । गुरुजी प्रीतिभरी निगाहों से हम पर कृपा बरसा रहे हैं, हम रोमांचित हो रहे हैं, आनंदित हो रहे हैं । हम गुरुजी से मानसिक वार्ताएँ करते थे और अब भी यह सिलसिला जारी है । गुरुदेव का शरीर नहीं है तब भी गुरुतत्त्व तो व्यापक है, सर्वत्र है, अमिट है ।

व्यासपूर्णिमा का पर्व हमारी सोयी हुई शक्तियाँ जगाने को आता है । हम जन्म-जन्मांतरों से भटकते-भटकते सब पाकर सब खोते-खोते कंगाल होते आये । यह पर्व हमारी कंगालियत मिटाने, हमारे रोग-शोक को हरने और हमारे अज्ञान को हर के भगवद्ज्ञान, भगवत्प्रीति, भगवद्रस, भगवत्सामर्थ्य भरनेवाला पर्व है । हमारी दीनता-हीनता को छीनकर हमें ईश्वर के वैभव से, ईश्वर की प्रीति से, ईश्वर के रस से सराबोर करनेवाला पर्व है गुरुपूर्णिमा । व्यासपूर्णिमा हमें स्वतंत्र सुख, स्वतंत्र ज्ञान, स्वतंत्र जीवन का संदेश देती है, हमें अपनी महानता का दीदार कराती है ।

मानव ! तुझे नहीं याद क्या,
तू ब्रह्म का ही अंश है ।

व्यासपूर्णिमा कहती है कि तुम अपने भाग्य के आप विधाता हो, तुम अपने आनंद के स्रोत आप हो । सुख हर्ष देगा, दुःख शोक देगा लेकिन ये हर्ष-शोक आयेंगे-जायेंगे, तुम तुम्हारे आनंदस्वरूप को जगाओ फिर सब बौने हो जायेंगे । यह वह पूनम है जो हर जीव को अपने भगवत्स्वभाव में स्थिति करने में बड़ा सहयोग देती है ।

जैसे बनिये के लिए हर दिवाली हिसाब-किताब और नया कदम आगे बढ़ाने के लिए है, ऐसे भी साधकों के लिए गुरुपूर्णिमा एक आध्यात्मिक हिसाब-किताब का दिवस है । पहले के वर्ष में सुख-दुःख में जितनी चोट लगती थी, अब उतनी नहीं लगनी चाहिए । पहले जितना समय देते थे नश्वर चीजों के लिए, उसे अब थोड़ा कम करके शाश्वत में शांति पायेंगे, शाश्वत का ज्ञान पायेंगे और शाश्वत 'मैं' को मैं मानेंगे, इस मरनेवाले शरीर को मैं नहीं मानेंगे । दुःख आता है चला जाता है, सुख आता है चला जाता है, चिंता आती है चली जाती है, भय आता है चला जाता है लेकिन एक ऐसा तत्त्व है जो पहले था, अभी है और बाद में रहेगा, वह मैं कौन हूँ ?... उस अपने 'मैं' को जाँचो तो आप पर इन लोफरों के थप्पड़ों का प्रभाव नहीं पड़ेगा । इनके सिर पर पैर रखकर मौत के पहले अमर आत्मा का साक्षात्कार हो जाय, इसी उद्देश्य से गुरुपूनम होती है ।

गुरुपूनम का संदेश है कि आप दृढ़निश्चयी हो जाओ सत् को पाने के लिए, समता को पाने के लिए । आयुष्य बीता जा रहा है, कल पर क्यों रखो !

संत कबीरजी ने कहा :

जैसी प्रीति कुटुम्ब की, तैसी गुरु सों होय ।
कहैं कबीर ता दास का, पला न पकडै कोय ॥

जितना इस नश्वर संसार से, छल-कपट से और दुःख देनेवाली चीजों से प्रीति है, उससे आधी अगर भगवान से हो जाय तो तुम्हारा तो बेड़ा पार हो जायेगा, तुम्हारे दर्शन करनेवाले का भी पुण्योदय हो जायेगा । ❑

गुरुवाक्य का कर अनुसरण,
विश्वास श्रद्धायुक्त हो ।
बतलाय है जो शास्त्र, कर
आचार संशयमुक्त हो ॥
जो जो बताते शास्त्र गुरु,
उपदेश सर्व यथार्थ है ।
संशय न उसमें कर कभी,
यदि चाहता परमार्थ है ॥
(आश्रम द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'आत्मगुंजन' से)

गुरुवचन करते हैं रक्षण

- पूज्य बापूजी

'राजवैभव में, घर-बार में काम, क्रोध, लोभ, वासनाओं की बहुलता होती है और ईश्वर को पाना ही मनुष्य-जीवन का सार है ।'- ऐसा सोचकर रघु राजा अपने पुत्र अज को राज्यवैभव देकर ब्रह्म-परमात्मा की प्राप्ति के लिए एकांत जंगल में चले गये ।

एक दिन जब रघु राजा तप कर रहे थे तो एक विप्र (ब्राह्मण) के पीछे राक्षस पड़ा । राक्षस कह रहा था : 'तू मेरा प्रिय भोजन है। मैं भूखा हूँ और ब्रह्माजी ने तुझे मेरे लिए ही भेजा है।' विप्र को तो प्राण बचाने थे, वह खूब दौड़ा-खूब दौड़ा और राक्षस को भी प्राण बचाने थे क्योंकि भूख का मारा था । विप्र दौड़ते-दौड़ते राजा रघु के चरणों में आया, बोला : ''महाराज ! मैं आपकी शरण में हूँ ।''

रघु राजा ने कहा : ''क्या बात है ?''

''महाराज ! मुझे बड़ा डर लग रहा है ।''

''निर्भय हो जाओ ।''

सबसे बड़ा अभयदान है । सत्संग सुनने से अभयदान मिलता है । राजा ने उसे निर्भयता का दान दे दिया । अब जो शरण आया है और जिसे अभयदान दे दिया है, उसकी रक्षा तो अपने प्राणों की बाजी लगा के भी करना कर्तव्य हो जाता है, शरणागतवत्सलता का यह सिद्धांत है। रघु राजा इस सिद्धांत को जानते थे ।

इतने में वह राक्षस 'छोड़ो-छोड़ो' कहता हुआ वहाँ आ पहुँचा । बोला : ''महाराज ! आप इसे छोड़ दो। मैं भूखा हूँ। यह आहार ब्रह्माजी ने मेरे लिए तय कर रखा है।''

''यह मेरी शरण आया है । मैं इसका त्याग नहीं करूँगा।''

''मैं भूखा हूँ। आप इसको शरण देंगे तो मैं भूख से मर जाऊँगा। आप तपस्वी, प्राणिमात्र में भगवान को देखनेवाले, सबके लिए निर्वैरता रखनेवाले हैं तो फिर मेरा शिकार छीनकर मेरे लिए वैरी जैसा व्यवहार क्यों करते हो राजन् ? आप इसको बचाओगे तो मुझे मारने का पाप आपको लगेगा।''

''मैं इसका त्याग नहीं करूँगा। तुम अपनी पसंद का कोई भी दूसरा आहार माँग लो।''

''मैं राक्षस हूँ। मांस मेरा प्रिय आहार है। आप तो शास्त्रज्ञ हैं, जानते हैं कि अपने कारण कोई भूख से पीड़ित होकर मरे तो पाप लगता है। इसको शरण दे बैठे हैं तो क्या आप मुझे मारने का पाप करेंगे ?''

रघु राजा असमंजस में पड़ गये कि 'मेरा व्रत है **निर्वैरः सर्वभूतेषु...** किसीसे वैर न करना, किसीका बुरा न चाहना। अब ब्राह्मण की रक्षा करता हूँ तो यह बेचारा राक्षस भूखा मरता है और राक्षस की रक्षा करता हूँ तो ब्राह्मण की जान देनी पड़ती है। अब क्या करूँ ?' तब उन्हें गुरु वसिष्ठजी का सत्संग याद आ गया कि 'कठिनता के समय में हरिनाम-स्मरण ही एकमात्र रास्ता है।'

आप सत्संग सुनते हो उस समय ही आपका भला होता है ऐसी बात नहीं है। सत्संग के शब्द आपको बड़ी-बड़ी विपदाओं से बचायेंगे और बड़े-बड़े आकर्षणों से, मुसीबतों से भी बचायेंगे ।

मनुष्य जब असमंजस में पड़े तो उसे क्या

करना चाहिए ? भगवान का नाम लेकर शांत हो जाय... फिर भगवान का नाम ले और फिर शांत हो जाय ।

रघु राजा ने निश्चल चित्त से श्रीहरि का ध्यान किया और कहा : ''**पातु मां भगवान विष्णुः ।** भगवान मुझे रास्ता बतायें । हरि ओऽऽ...म् । हरि ! हरि ! हे मार्गदर्शक ! हे दीनबंधु ! दीनानाथ ! मेरी डोरी तेरे हाथ । हम हरि की शरण हैं । जो सबमें बसा है विष्णु, हम उसकी शरण हैं ।''

भगवान की स्मृति करते ही देखते-देखते राक्षस को दिव्य आकृति प्राप्त हुई । भगवान की स्मृति ने उस राक्षस के कर्म काट दिये । वह कहता है : ''साधो ! साधो !! मैं पिछले जन्म में शतद्युम्न राजा था । यह राक्षस का रूप मुझे मेरे दुष्कर्मों की वजह से महर्षि वसिष्ठजी के शाप से मिला था । राजन् ! तुमने हरि की शरण ली । तुम्हारे जैसे धर्मात्मा, तपस्वी के मुख से हरिनाम सुनकर मुझे मुक्ति मिल गयी । अब मुझे इस ब्राह्मण की हत्या करके पेट नहीं भरना है, मैं भी हरि की शरण हूँ ।'' राक्षस की सद्गति हुई, ब्राह्मण को अभयदान मिला और रघु राजा तृप्तात्मा हो गये । क्या भगवान का सुमिरन है ! क्या सत्संग का एक वचन है ! जो सत्संग का फायदा लेते हैं वे धनभागी हैं और जो दूसरों को सत्संग दिलाते हैं उनके भाग्य का तो कहना ही क्या !

धन्या माता पिता धन्यो... □

पिछले अंक की 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' ज्ञान पहेली के उत्तर

१. ऊर्ध्वरिता २. उत्कृष्ट ३. शुक्रस्राव ४. मज्जा ५. अमेरिकन पेनल ६. स्वप्न ७. नरसिंह मेहता ८. चाक्षुषी ९. थोरो १०. लघुरुद्री

'अक्ल लड़ाओ, ज्ञान बढ़ाओ' पहेली के उत्तर : (१) आलस्य (२) विद्या (३) गंगा (४) सद्बुद्धि (५) मन (६) चैतन्य महाप्रभु

ढूँढ़िये संतों के नाम

नीचे दिये गये पद जिन संतों के हैं, उनके नाम दिये गये शब्द-समूह में से खोजिये ।

(१) दादू इस संसार मैं, ये दो रतन अमोल ।
इक साँई अरु संतजन, इनका मोल न तोल ॥

(२) महापुरुष पारस परसि, पलटहिं प्राण सु धात ।
मिलतौं मंगल मौन में, रज्जब तहां न बात ॥

(३) मथुरा जावहु द्वारका, भाँवै जा जगनाथ ।
साधुसँगति हरिभगति बिन, कछू न आवै हाथ ॥

(४) जन 'सुंदर' सतसंग तैं, उपजै अद्वय ज्ञान ।
मुक्ति होय, संसय मिटै, पावै पद निर्बान ॥

(५) बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥

(६) उपजे खपे जनम बहुबारा,
गुरुकृपा बिन नहि विस्तारा ।
सद्गुरु देव दया जब करही,
सो प्राणी भवसागर तरही ॥

(७) आज्ञाकारी पीव की, रहै पिया के संग ।
तन मन सूँ सेवा करै, और न दूजो रंग ॥

कि	न	प्र	न	ई	द	की	जी	ग	नी
व	जी	स	दा	ण	र	च	सुं	या	ल
मि	न	र	ल	झी	ज	द	व	न	जी
रो	जी	बु	न्न	घ	र	त्र	क्ति	ब	ल
ख	म	क्ष	वि	दा	जी	द	ज्ज	प्र	जी
मी	त	य	स	अ	ण	र	म	र्म	यं
रा	प्री	जी	रो	दा	त	ज्ञ	बी	ध	णी
जी	त	ठ	ई	सं	सी	ध	पं	क	मी
स	सं	य	जी	दू	दा	ल	त्र	जी	सं
क	ढ़	झ	ङ	थी	ना	ग	तु	झ	ता

गुरु-महिमा

गुरु हैं बड़ गोबिन्द तें, मन में देखु बिचार ।
हरि सुमिरै सो वार है, गुरु सुमिरै सो पार ॥
तीन लोक नौ खंड में, गुरु तें बड़ा न कोइ ।
करता करै न करि सकै, गुरु करै सो होइ ॥
कबिरा हरि के रूठते, गुरु के सरने जाइ ।
कहै कबीर गुरु रूठते, हरि नहिं होत सहाइ ॥

– संत कबीरजी

सकल तजि गुरु ही से ध्यान लगैहौं ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न पूजिहौं,
ना मूरत चित्त लैहौं ।
जो प्यारा मोरे घट माँ बसतु है,
वाही को माथ नवैहौं ॥

– संत पलटू साहिबजी

✼ साधुओं की संगति चावल के धोवन (पानी) के समान है । चावल का जल नशा दूर करता है । इस कारण नशेबाज का नशा चावल का पानी पीने से दूर हो जाता है । संसाररूपी मद में मत्त जीव का नशा मिटाने के लिए केवल साधुसंग ही एक उपाय है ।

✼ जो अपने अध्यात्म-गुरु को मनुष्य समझकर बर्ताव करेंगे, वे उनके गुरुभाव से कुछ भी उपकार न उठा सकेंगे ।

– श्री रामकृष्ण परमहंसजी

ऐसा सतगुरु हम मिला बेपरवाह अबंध ।
परम हंस पूरन पुरुष रोम रोम रबि चंद ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तुरिया के रे तीर ।
सब बिद्या बानी कहै छानै नीर अरु छीर ॥
माया का रस पीय कर हो गये भूत खबीस ।
ऐसा सतगुरु हम मिला भक्ति दई बकसीस ॥
पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु ले गया साथ ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं पारस लागा हाथ ॥

– संत गरीबदासजी

हरि किरपा जो होय तो, नाहीं होय तो नाहिं ।
पै गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिं ॥
गुरु आज्ञा दृढ़करि गहै, गुरु मत सहजो चाल ।
रोम रोम गुरु को रटै, सो सिष होय निहाल ॥

– संत सहजोबाई

इक लख चन्दा आनि घर सूरज कोटि मिलाइ ।
दादू गुरु गोविन्द बिन तो भी तिमिर न जाइ ॥
घटि घटि रामरतन है, दादू लखै न कोइ ।
सतगुर सबदौं पाइये, सहजैं ही गम होइ ॥

– संत दादू दयालजी महाराज

सद्गुरु शब्द अनन्त दत[1], युग युग काटे कर्म ।
जन रज्जब उस पुण्य पर, और न दीसे धर्म ॥
'सद्गुरु का नामदान करना, अनंत दान है । यह अनंत युगों के कर्मों को नष्ट कर डालता है । सद्गुरु के शब्दजन्य ज्ञान से होनेवाले पुण्य से अधिक अन्य कोई भी धर्म नहीं दिखता ।'
गुरु बिन गम[2] नहिं पाइये, समझ न उपजे आय ।
रज्जब पंथी पंथ बिन, कौन दिसावर[3] जाय ॥
जीव रच्या जगदीश ने, बाँध्या काया माँही ।
जन रज्जब मुक्ता किया गुरु सम कोई नाहिं ॥

– संत रज्जबजी महाराज

संतनि की महिमा कही श्रीपति श्रीमुख गाइ ।
तातैं 'सुंदर' छाड़ि सब संतचरन चित लाइ ॥

– संत सुंदरदासजी महाराज

एक भरोसा एक बल, एक आस बिस्वास ।
स्वाँति सलिल[4] गुरु चरन हैं, चात्रिक[5] तुलसी दास ॥

– संत तुलसीदासजी

१. नाम दान २. ध्यान ३. विदेश ४. जल ५. चातक

सतगुर दीन दयाल बिन जुग जुग मारे जायँ ॥
जुग जुग मारे जायँ खायँ फिर जम की लाती ॥
ऐसे मूरख लोग चलैं वाही के साथी ॥

– संत तुलसी साहिब

गुरु के चरण प्रीत नहिं लागी,
सो प्राणी महामंद अभागी ।
गुरुनिंदा जे सुनही काना,
अधम नहिं कोई ताही समाना ।

सद्गुरु सेवक जे सुख पावे,
इन्द्रादिक कु सुपने नावे।
गुरुकुं ब्रह्मरूप जे जोई,
ब्रह्मभावे आपे ब्रह्म होई।
प्रीतम सोई परम पद पावे,
जो सद्गुरु के शरणे आवे।
गुरुमहिमा सुने अरु गावे,
सो बहोर गर्भवास न आवे॥

– संत प्रीतमदासजी

ज्ञानवृद्ध जो बन गये, धर्म सूक्ष्म को जान।
मैत्री उनकी ढंग से, पा लो महत्त्व जान॥
बहुत जनों की शत्रुता, करने में जो हानि।
उससे बढ़ सत्संग को, तजने में है हानि॥
साथी कोई है नहीं, साध संग से उच्च।
बढ़कर कुसंग से नहीं, शत्रु हानिकर तुच्छ॥

– संत तिरुवल्लुवरजी

गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः
संसारादचिराद्भव मुक्तः ।
सेन्द्रियमानसनियमादेवं
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम् ॥

'गुरुदेव के चरणकमलों का अनन्य भक्त होकर संसार से शीघ्र ही मुक्त हो जा । इस प्रकार इन्द्रियों के सहित मन का संयम करने से तू शीघ्र ही अपने हृदयस्थ देव को देखेगा ।'

– जगद्गुरु आद्य शंकराचार्यजी

* नमक और कपूर एक जैसे दिखते हैं पर स्वाद की दृष्टि से अनुभव करने पर अलग जान पड़ते हैं । ऐसे ही पुरुषों में पुण्यपुरुष (ब्रह्मज्ञानी, भगवत्प्राप्त महापुरुष) भी अलग हैं (अर्थात् उन्हें पहचानना चाहिए) ।

– संत वेमना

हममें पहले से भरी गलत-सलत आदतों, विचारों को खोजकर बाहर निकालना और फिर अमृत-सदृश उत्तम-उत्तम आचार-विचार भरना - ये दो कार्य गुरु करते हैं । आत्मप्राप्ति की यात्रा तो करवा दें परंतु उसमें श्रम का एहसास न होने दें, ऐसे होते हैं अनुभवसंपन्न महापुरुष - गुरु । लघु नहीं गुरु... ऊँची समझ के, ऊँचे सामर्थ्य के, ऊँचे आनंद के धनी । ऐसे गुरु का सान्निध्य मिलने पर शिष्य को पता ही नहीं चलता कि उसने कितनी पीढ़ियों को तारनेवाली साधना कर ली ।

– पूज्य बापूजी

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ ।
गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ॥
हरि ने जन्म दियो जग माहीं ।
गुरु ने आवागवन छुटाहीं॥
हरि ने पाँच चोर दिये साथा ।
गुरु ने लई छुटाय अनाथा॥
हरि ने कुटुँब जाल में गेरी ।
गुरु ने काटी ममता बेरी[1]॥
हरि ने रोग भोग उरझायौ ।
गुरु जोगी कर सबै छुटायौ॥
हरि ने कर्म भर्म भरमायौ ।
गुरु ने आतम रूप लखायौ॥
हरि ने मो सूँ आप छिपायौ ।
गुरु दीपक दै ताहि दिखायौ॥
फिर हरि बंध मुक्ति[2] गति लाये ।
गुरु ने सबही भर्म मिटाये ॥
चरनदास पर तन मन वारूँ ।
गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारूँ॥

– संत सहजोबाई

१. बेड़ी २. ऐसी मुक्ति जिसमें झीनी माया का बंधन लगा रहता है ।

गुरु बिन ज्ञान न उपजे

गुरु साक्षात् भगवान हैं, जो साधकों के पथ-प्रदर्शन के लिए साकार रूप में प्रकट होते हैं। गुरु का दर्शन भगवद्दर्शन है। गुरु का भगवान के साथ योग होता है तथा वे अन्य लोगों में भक्ति अनुप्राणित करते हैं। उनकी उपस्थितिमात्र सबके लिए पावनकारी है।

जिस प्रकार एक दीपक को जलाने के लिए आपको दूसरे प्रज्वलित दीपक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार एक प्रबुद्ध आत्मा दूसरी आत्मा को प्रबुद्ध कर सकती है।

सभी महापुरुषों के गुरु थे। सभी ऋषियों, मुनियों, पैगम्बरों, जगद्गुरुओं, अवतारों, महापुरुषों के चाहे वे कितने ही महान क्यों न रहे हों, अपने निजी गुरु थे। श्वेतकेतु ने उद्दालक से, मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य से, भृगु ने वरुण से, शुकदेवजी ने सनत्कुमार से, नचिकेता ने यम से, इन्द्र ने प्रजापति से सत्य के स्वरूप की शिक्षा प्राप्त की तथा अन्य अनेक लोग ज्ञानीजनों के पास विनम्रतापूर्वक गये, ब्रह्मचर्यव्रत का अति नियमनिष्ठा से पालन किया, कठोर अनुशासनों की साधना की तथा उनसे ब्रह्मविद्या सीखी।

देवताओं के भी बृहस्पति गुरु हैं। दिव्य आत्माओं में महान सनत्कुमार भी गुरु दक्षिणामूर्ति के चरणों में बैठे थे।

गुरु किसे बनायें ?

यदि आप किन्हीं महात्मा के सान्निध्य में शांति पाते हैं, उनके सत्संग से अनुप्राणित होते हैं, यदि वे आपकी शंकाओं का समाधान कर सकते हैं, यदि वे काम, क्रोध तथा लोभ से मुक्त हैं, यदि वे निःस्वार्थ, स्नेही तथा अस्मितारहित हैं तो आप उन्हें अपना गुरु बना सकते हैं। जो आपके संदेहों का निवारण कर सकते हैं, जो आपकी साधना में सहानुभूतिशील हैं, जो आपकी आस्था में बाधा नहीं डालते वरन् जहाँ आप हैं वहाँ से आगे आपकी सहायता करते हैं, जिनकी उपस्थिति में आप आध्यात्मिक रूप से अपने को उत्थित अनुभव करते हैं, वे आपके गुरु हैं। यदि आपने एक बार गुरु का चयन कर लिया तो निर्विवाद रूप से उनका अनुसरण करें। भगवान गुरु के माध्यम से आपका पथ-प्रदर्शन करेंगे।

एक चिकित्सक से आपको औषधि-निर्देश तथा पथ्यापथ्य का विवेक मिलता है, दो चिकित्सकों से आपको परामर्श प्राप्त होता है और यदि तीन चिकित्सक हुए तो आपका अपना दाह-संस्कार होता है।

इसी भाँति यदि आपके अनेक गुरु होंगे तो आप किंकर्तव्यविमूढ़ हो जायेंगे। क्या कारण है, यह आपको ज्ञात न होगा। एक गुरु आपसे कहेगा - 'सोऽहम् जप करो।' दूसरा कहेगा - 'श्रीराम का जप करो।' तीसरा कहेगा - 'अनाहत नाद को सुनो।' आप उलझन में पड़ जायेंगे। एक गुरु से, जो श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ हों, संलग्न रहें और उनके उपदेशों का पालन करें। वहीं आपकी यात्रा पूरी होगी। ❑

गुरुः परं तीर्थं...

'सूर्य दिन में प्रकाश करते हैं, चन्द्रमा रात्रि में प्रकाशित होते हैं और दीपक घर में उजाला करता है तथा सदा घर के अँधेरे का नाश करता है परंतु गुरु अपने शिष्य के हृदय में रात-दिन सदा ही प्रकाश फैलाते रहते हैं। वे शिष्य के सम्पूर्ण अज्ञानमय अंधकार का नाश कर देते हैं। अतएव शिष्यों के लिए गुरु ही परम तीर्थ हैं।' (पद्म पुराण, भूमि खण्ड : ८५.१२-१४)

संतवाणी से सहजो बनी महान

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

दिल्ली के परीक्षितपुर नामक स्थान में २५ जुलाई १७२५ को चार भाइयों के बाद एक कन्या जन्मी। उसका नाम था सहजो। कन्या के पिता का नाम था हरिप्रसाद और माता का नाम था अनूपी देवी। तब बचपन में ही शादी की परम्परा थी। सहजो ११ वर्ष की उम्र में दुल्हन बनी। गहने-गाँठे, सुहाग की साड़ी आदि जो कुछ भी होता है सब पहनाया। दुल्हन सजी-धजी है। बैंड-बाजे बज रहे हैं, विवाह के लिए दूल्हा आ रहा है। आतिशबाजी के पटाखे फूट रहे हैं। वर-कन्या को आशीर्वाद देने हेतु संत चरणदासजी महाराज को आमंत्रित किया गया था। चरणदासजी पधारे। पिता ने प्रार्थना की : ''महाराज ! हमारी कन्या को आशीर्वाद दें।''

दुल्हन पर नजर डालते ही आत्मस्वभाव में जगे उन त्रिकालज्ञानी संत ने कहा : ''अरे सहजो ! सहज में जो ईश्वर मिल रहा है, पति मिल रहा है, उस पति को छोड़कर तू कौन-से मरनेवाले पति के पीछे पड़ेगी ! तेरा जीवन तो जगत्पति के लिए है।

चलना है रहना नहीं, चलना विश्वा बीस[1] ।
सहजो तनिक सुहाग पर, कहा गुथावै शीश ॥

इस सुहाग पर क्या सिर सजा रही है ! तनिक देर का सुहाग है। या तो पति चला जायेगा या तो पत्नी चली जायेगी। यह सदा का सुहाग नहीं है। तू तो सदा सुहागिन होने के लिए जन्मी है। थोड़ी देर का सुहाग तेरे क्या काम आयेगा ?

जो विश्व का ईश्वर है वह तेरा आत्मा है, उसको जान ले। जो सदा साथ में रहता है, वह दूर नहीं, दुर्लभ नहीं, परे नहीं, पराया नहीं।''

सहजो ने सुना और सुहाग के साधन-शृंगार सब उतारने शुरू कर दिये। वह बोली : ''मैं विवाह नहीं करूँगी।'' उधर क्या हुआ कि आतिशबाजी के पटाखों से घोड़ी बिदकी और दूल्हे का सिर पेड़ से टकराया। दूल्हा वहीं गिरकर मर गया।

जो होनी थी संत ने पहले ही बता दी थी। क्या घटना है, क्या होना है यह जानकर पूरे खानदान को बचा लिया और कन्या को विधवा होने के कलंक से रक्षित कर दिया। चारों भाई और माँ-बाप उसी समय बाबा के शिष्य बन गये।

अगर चरणदासजी थोड़ी देर से आते और दूल्हा-दुल्हन सात फेरे फिर जाते तो सारी जिंदगी 'विधवा' का कलंक लगता। लेकिन यह कन्या विधवा होकर नहीं जी, कुमारी-की-कुमारी रही। सद्गुरु के मार्ग पर चली तो दुल्हन बनी सहजो परम पद को पानेवाली महायोगिनी हो गयी। योग-साधना करके महान सिद्धात्मा बन गयी। सद्गुरु के लिए उसने अपना हृदय ऐसा सँजोया कि उसकी कविताएँ और लेखन पढ़ने से हृदय भर आता है। सहजो ने अपनी वाणी में कहा :

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ ।
गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ ॥
हरि ने जन्म दियो जग माँहीं ।
गुरु ने आवागवन छुटाहीं ॥

सहजो भज हरि नाम कूँ, तजो जगत सूँ नेह ।
अपना तो कोई है नहीं, अपनी सगी न देह॥

भगवान ने तो जन्म और मृत्यु बनायी, मुक्ति और बंधन बनाया लेकिन मेरे गुरु ने तो केवल मुक्ति बनायी। हरि ने तो जगत में (शेष पृष्ठ १६ पर)

[1] बीस बिस्वा = निःसंदेह

श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी के
गुर्वष्टकम् का हिन्दी पद्यानुवाद

गुरुवर का आशीष मिलेगा

कंचन काया, काम्य कामिनी,
कीर्ति-पताका फहराये ।
धन सम्पदा अपार सदन में,
आकांक्षानुरूप आये ॥
सुत-दारा-सम्पत्ति-स्वजन,
गृह भले भाग्य से मिल जाये ।
चितचाहा हर काम फलित हो,
हृदयकमल अति खिल जाये ॥
पर गुरुवर के श्रीचरणों में,
लगती है यदि लगन नहीं ।
तो सारा सुख मिथ्या समझो,
टिक सकता यह भला कहीं !
वेद-शास्त्र कंठस्थ भले हों,
कर लेते हों कविताई ।
विद्वानों का संग सुलभ हो,
बुद्धि विलक्षण हो पायी ॥
जय-जयकार देश में होती,
मान विदेशों में मिलता ।
सदाचार पालन करने से,
उर-अरविंद सहज खिलता ॥
पर गुरुवर के श्रीचरणों में,
लगती है यदि लगन नहीं ।
तो सारा सुख मिथ्या मानो,
टिक सकता यह भला कहीं !
लोकपाल, दिग्पाल भले,
सेवा कर नहीं अघाते हों ।
भले चरणरज शीश चढ़ा,
भूपति सौभाग्य मनाते हों ॥
दानवृत्ति के बल से यश का,
होता हो विस्तार भले ।
सहृदय गुरु की अनुकम्पा से,
मिलते हों उपहार भले ॥
अश्व-राज्य-धन-धान्य सुलभ हों,
मगर न बोले इतराकर ।
मन न भले विचलित होता हो,
भोग-योग-रमणी पाकर ॥
पर गुरुवर के श्रीचरणों में,
लगती है यदि लगन नहीं ।
तो सारा सुख मिथ्या मानो,
टिक सकता यह भला कहीं !
तन में, वन में या कि सदन में,
हो किंचित् आसक्ति नहीं ।
मुद्रा और वस्तु के प्रति,
हो मानस में अनुरक्ति नहीं ॥
मणि-माणिक-मुक्ता की ढेरी,
सतत सदन में आती हो ।
निशि में समालिंगिता पत्नी,
सुख असीम पहुँचाती हो ॥
पर गुरुवर के श्रीचरणों,
लगती है यदि लगन नहीं ।
तो सारा सुख मिथ्या मानो,
टिक सकता यह भला कहीं !
हों गृहस्थ भूपती यती या,
ब्रह्मचर्यधारी, रागी ।
गुरु अष्टक के पाठ से जिनकी,
गुरु में प्रीति है यदि जागी ॥
तो इच्छित फल प्राप्त सभी हों,
ब्रह्मानंद भी वह पाता ।
गुरुवचनों में भावसहित,
जिनका भी मन है लग जाता ॥

– अनुवादकर्ता
महेशचन्द्र त्रिपाठी ❑

गुरु बिन ब्रह्मानंद तो क्या सांसारिक सुख भी दुर्लभ !

परमेश्वर का साक्षात्कार एकमात्र गुरु से सम्भव है । जब तक गुरु की कृपा से हमारी अंतःशक्ति नहीं जागती, अंतःज्योति नहीं प्रकाशती, अंतर का दिव्य ज्ञानचक्षु नहीं खुलता तब तक हमारी जीवदशा नहीं मिटती । अतः अंतःविकास के लिए, दिव्यत्व की प्राप्ति के लिए हमें मार्गदर्शक की यानी पूर्ण सत्य के ज्ञाता एवं शक्तिशाली सद्गुरु की अत्यंत आवश्यकता है। जैसे प्राण बिना जीना सम्भव नहीं, उसी तरह गुरु बिना ज्ञान नहीं, शक्ति का विकास नहीं, अंधकार का नाश नहीं, तीसरे नेत्र का उदय नहीं। गुरु की जरूरत मित्र से, पुत्र से, बंधु से और पत्नी से भी अधिक है। गुरु की जरूरत द्रव्य से, कल-कारखानों से, कला से और संगीत से भी अधिक है। अधिक क्या कहूँ, गुरु की जरूरत आरोग्य और प्राण से भी ज्यादा है । गुरु की महिमा रहस्यमय और अति दिव्य है। वे मानव को नया जन्म देते हैं, ज्ञान की प्रतीति कराते हैं, साधना बताकर ईश्वरानुरागी बनाते हैं।

गुरु वे हैं जो शिष्य की अंतःशक्ति को जगाकर उसे आत्मानंद में रमण कराते हैं। गुरु की व्याख्या यह है - जो शक्तिपात द्वारा अंतःशक्ति कुण्डलिनी को जगाते हैं, यानी मानव-देह में पारमेश्वरी शक्ति को संचारित कर देते हैं, जो योग की शिक्षा देते हैं, ज्ञान की मस्ती देते हैं, भक्ति का प्रेम देते हैं, कर्म में निष्कामता सिखा देते हैं, जीते-जी मोक्ष देते हैं, वे परम गुरु शिव से अभिन्नरूप हैं। वे शिव, शक्ति, राम, गणपति, माता-पिता हैं। वे सभीके पूजनीय परम गुरु शिष्य की देह में ज्ञानज्योति को प्रज्वलित करते हुए अनुग्रहरूप कृपा करते हैं और लीलाराम होकर रहते हैं। गुरु के प्रसाद से नर नारायण रूप बनकर आनंद में मस्त रहता है। ऐसे गुरु महा महिमावान हैं, उनको साधारण जड़ बुद्धिवाले नहीं समझ सकते।

साधारणतया गुरुजनों का परिचय पाना, उन्हें समझना महाकठिन है । किसीने थोड़ा चमत्कार दिखाया तो हम उसे गुरु मान लेते हैं, थोड़ा प्रवचन सुनाया तो उसे गुरु मान लेते हैं, किसीने मंत्र दिया या तंत्र की विधि बतलायी तो उसे गुरु मान लेते हैं । इस तरह अनेक जनों में गुरुभाव करके अंतःसमाधान से हम वंचित रह जाते हैं। अंत में हमारी श्रद्धा भंग हो जाती है और फिर हम गुरुत्व को भी पाखण्ड समझने लगते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हम सच्चे गुरुजनों से दूर रह जाते हैं। पाखण्डी गुरु से धोखा खाकर हम सच्चे गुरु की अवहेलना करने लग जाते हैं।

साक्षात्कारी गुरु को साधारण समझकर उनको त्यागो मत। गुरु की महानता तब समझ में आती है जब तुम पर गुरुदेव की पूर्ण कृपा होती है। गुरु अपने शिष्यों को एक ऊँचे स्तर पर ले जा के, सत्यस्वरूप बताकर शिव में मिला के शिव ही बना देते हैं।

ऐसे गुरुजनों को गुरु मानकर, उन तत्त्ववेत्ताओं से दीक्षा पाना क्या परम सौभाग्य नहीं है ! उनके दिये हुए शब्द ही चैतन्य मंत्र हैं । वे चितिमय परम गुरु मंत्र द्वारा, स्पर्श द्वारा या दृष्टि द्वारा शिष्य में प्रवेश करते हैं । इसीलिए गुरु-सहवास (सान्निध्य), गुरु-आश्रमवास, गुरु-सेवा, गुरु-गुणगान, गुरुजनों से प्रेमोन्मत्त स्थिति में बाहर बहनेवाले चिति-स्पंदनों का सेवन शिष्य को पूर्ण सिद्धपद की प्राप्ति करा देने में समर्थ हैं, इसमें क्या आश्चर्य ! – स्वामी मुक्तानंद □

सिद्धि हमारै सांइयां... रिद्धि हमारै राम

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक मुसलमान फकीर हो गये मौलाना जलालुद्दीन रूमी। उन्होंने अपने सेवकों से पूछा कि ''गधा किस समय रेंकता है ?''

जब कोई उत्तर नहीं दे पाया तब कहा : ''गधा दो समय रेंकता है। अब बताओ, वे कौन-से दो समय हैं ?''

शागिर्द तो जवाब देने में विफल हुए। उन्होंने कहा : ''मैं ही तुम्हें सुनाता हूँ। गधे को जब भूख लगती है तब रेंकता है और जब गधी की चाहना होती है तब रेंकता है। परंतु जिसमें भगवान के लिए पुकार नहीं है, प्रेम नहीं है वह दो पैरवाला गधा तो चार पैरवाले गधे से भी गया-बीता है। क्योंकि चार पैरवाले गधे को संत नहीं हैं, शास्त्र नहीं हैं किंतु दो पैरवाले को संत और शास्त्र हैं फिर भी सत्संग में नहीं जाता और संसार की चीजों के लिए ही रेंकता रहता है।''

गुरुभक्ति से, सत्संग से छोटे-से-छोटे जीव, संसार में गधे की नाईं मजदूरी करके मरनेवाले जीव भी अमर पद को पा लेते हैं।

जयपुर से सटे आमेर को कौन नहीं जानता है ! वहाँ दादू दयालजी महाराज रहते थे। एक बार दादूजी साँभर आये हुए थे। उनका नाम सुनकर एक बनिया जो रुपये-पैसे की ख्वाहिश में इधर-उधर भटक रहा था, उनके पास आया। उसका नाम था टीलाजी। टीलाजी ने माथा टेका, प्रणाम किया। दादूजी तो जानते थे कि यह लोभी है लेकिन कुछ भी हो, संत के पास तो आया है न ! इतना अभागा नहीं है कि सत्संग में न आये, संत के पास न आये। कुछ तो भाग्य है।

दादूजी ने उसे संकेत करके पूछा : ''बोलो, कहाँ से आये हो ? क्या चाहते हो ?''

वह बोला : ''महाराज ! संतों से झूठ बोलने से तो पाप लगता है। मैं कोई भगवान के लिए या संत-दर्शन के लिए नहीं आया। मुझे तो पैसा चाहिए पैसा ! मैं किसी ऐसे रसायनी अथवा सिद्ध-महात्मा की खोज में घूम रहा हूँ जो मुझे सोना बनाने की युक्ति बता दे।''

दादूजी का दर्शन तो उसने किया लेकिन अंदर में इच्छा थी रुपयों की। जो हमारे पास पहले नहीं थे, बाद में नहीं रहेंगे, उन्हींकी इच्छा थी। जो हमारे पास पहले था, अभी है और बाद में भी साथ नहीं छोड़ेगा, उस असली धन का उस बेचारे को ज्ञान नहीं था। दादू दयालजी ने दया करके नश्वर धन की आसक्ति छुड़ाकर उसमें शाश्वत धन की प्यास जगा दी।

दादूजी ने कहा : ''तू मेरे से ऋद्धि-सिद्धि सीखने आया है तो मेरे पास कौन-सी सिद्धि है सुन ले :

सिद्धि हमारै सांइयां, करामात करतार।
रिद्धि हमारै राम है, आगम अलख अपार॥
दादू राम रसायन नित चवै, हरि है हीरा साथ।
सो धन मेरै सांइयां, अलख खजीना हाथ॥

हमारे पास तो भगवान के नाम का धन है, हरिरूपी हीरा है, राम का रसायन है। सोना बनाने की विद्या हम नहीं जानते हैं लेकिन सोने से न मिले, हीरों से न मिले, दुनिया की सारी चीजों से न मिले, मेरे पास वह रसायन है

हरिरस पाने का।''

लेकिन लोभी टीलाजी को यह बात जल्दी जँची नहीं। दादूजी समझ गये कि यह नकली धन पाने को आया है लेकिन नकली धन को पा-पाकर तो कई धनवान चले गये। नकली धन और सत्ता का अहंकार आदमी को बावरा बना देता है। असली सत्ता और असली धन तो परमात्म-ज्ञान है।

दादू दयालजी ने मीठी नजर डालते हुए कृपा बरसायी और कहा :

''सद्गुरु चरणां मस्तक धरणां,
रामनाम कहि दुस्तर तिरणां।
अठ सिधि नवनिधि सहजै पावै,
अमर अभय पद सुख में आवै॥''

यह सुन के टीलाजी की रीढ़ की हड्डी सीधी हो गयी कि 'अष्टसिद्धि, नवनिधि मिलेगी! उनके आगे तो धनवान और सत्तावान कोई मायना नहीं रखते।'

वह बोला : ''महाराज ! धन मिलता है तो सरकार का डर रहता है, आयकर का डर रहता है, जिसको कर्ज दिया है उससे वापस न आये तो पैसे डूब जाने का डर रहता है और मौत का भी डर रहता है। अष्टसिद्धि, नवनिधि अगर मुझे मिल जायें तो महाराज ! फिर तो इस धन की ऐसी-तैसी ! इस धन को सँभालनेवाले तो मेरे पीछे-पीछे घूमेंगे। महाराज ! वही कृपा करिये।''

सत्संग सुनते-सुनते टीलाजी की नश्वर धन की वासना, ऐहिक जगत का अंधा आकर्षण शांत हो गया और परमात्म-रस का, परमात्म-ज्ञान का, परमात्म-शांति व परमात्म-सामर्थ्य का सुसंगीत सुनने में उनकी रुचि होने लगी। मनुष्य की जहाँ रुचि होती है, उसमें वह जल्दी प्रगति करता है। अपनी संसार की चीजों में रुचि है इसलिए भगवत्प्राप्ति में देर हो रही है। अगर भगवान में रुचि हो जाय तो भगवान सहज में मिल जाते हैं। संत कबीरजी ने कहा :

जैसी प्रीति कुटुम्ब की, तैसी गुरु सों होय।
कहैं कबीर ता दास का, पला न पकड़ै कोय॥

जितना इस नश्वर दुनिया की चीजों में हेत (लगाव) है, उतना अगर हरि में हो तो परमात्मप्राप्ति सहज हो जाती है। राजा जनक को घोड़े की रकाब में पैर डालते-डालते हो गयी थी। परीक्षित राजा को सात दिन में हो गयी थी, किसीको चालीस दिन में हो जाती है, किसीको छः महीने में हो जाती है। ध्रुव को छः महीने में हो गयी, आठ वर्ष के लड़के रामी रामदास को कुछ महीनों में हो गयी, मीरा को कुछ वर्षों में हो गयी। ईश्वरप्राप्ति के लिए इतनी पदवियाँ, इतने वर्ष चाहिए ऐसा कुछ नियम नहीं है। जितनी तड़प, जितना सद्गुरु का सामर्थ्य और शिष्य की एकाग्रता, अनासक्ति, तत्परता, दृढ़ संकल्प उतना ही वह ईश्वरीय सामर्थ्य अपना प्रभाव दिखाता है।

दादूजी की करुणा-कृपा और टीलाजी की तत्परता थी। टीलाजी की इस नश्वर धन की पोल जानने की बुद्धि खुली। यहाँ की सत्ता, यहाँ का धन, यहाँ का शरीर देखते-ही-देखते ढल जाता है, फिर भी जो नहीं ढलता है वह शाश्वत धन, शाश्वत सत्ता, शाश्वत रस ही सार है, ऐसा टीलाजी की बुद्धि में विवेक जगा। उन्होंने अपने-आपको दादूजी के चरणों में समर्पित कर दिया।

दादूजी के श्रीचरणों में सत्संग सुनते समय टीलाजी एकाकार हो जाते और दादूजी के मुखारविंद पर टकटकी लगाकर देखते रहते। दादूजी टीलाजी की तत्परता, एकाग्रता देखकर दादूजी ने उन्हें गुरुमंत्र की दीक्षा दे दी और अपने निकट

सेवा में रख लिया ।

दादूजी जब साँभर पधारे थे तब एक छतरी के नीचे रहते थे । बरसात का पानी उन्हें तंग नहीं करता था । वे तो सिद्धपुरुष थे । एक बार बड़ी भारी बरसात हुई । छतरी के अंदर भी पानी आ गया । भक्त भी पानी में आ गये । दादूजी ने सभी से कहा : ''सत्यराम, सत्यराम... बोलते-बोलते पानी पर चलते जाओ, तालाब को पार कर जाओगे ।'' टीलाजी 'सत्यराम' बोलते पानी में पैर रखते हुए ऐसे चले गये जैसे धरती पर चलते हैं । टीलाजी के मन में हुआ कि 'हमको तो बाबाजी ने बोलने को कहा पर खुद तो बोलते नहीं !' अब उनको क्या पता कि बाबाजी कहाँ पहुँचे हुए हैं ! वे खुद बोलें-न बोलें कोई फर्क नहीं पड़ता । जो गुरु में, शास्त्र में, भगवान में शंका करता है, वह डूबता है । टीलाजी डूबने लगे । प्रार्थना की : ''महाराज ! बचाओ, मैं आपकी शरण आया हूँ । मैं तैरने को आया हूँ ।''

दादूजी ने कहा : ''टीला ! तुम्हारे मन में शंका उत्पन्न हो गयी थी । गुरु के वचनों में कभी भी शंका नहीं करनी चाहिए । उनके वचनों में कोई अंतर नहीं है । संशय को त्याग दो, निश्चय ही तर जाओगे ।''

संशय सबको खात है संशय सबका पीर ।
संशय की फाँकी करे उसका नाम फकीर ॥

टीलाजी पार उतर गये । टीलाजी निःसंशय होकर संतत्व को उपलब्ध हो गये । लोभी, स्वार्थी टीलाजी दादूजी के चरणों में सोना बनाने की रसायन विद्या सीखने को आये थे लेकिन महात्मा के वचन माने तो महापुरुष हो गये । कहाँ तो धन के लिए भटक रहे थे और कहाँ बाद में कई धनवान उनकी चरणरज सिर पर लगाते थे !

संत टीलाजी की वाणी

गुर बिन क्यूं गोब्यंद पाइये ।
जासूं मन चित हेत लगाइये ॥......
गुर दादू आगैं करि चाल ।
टीला साहिब करै निहाल ॥

'जिसमें मन और चित्त को लगाकर प्रीति की जा सके ऐसे गोविंद को बिना गुरु के कैसे पाया जा सकता है ! गुरु के बिना कोई भी सही रास्ता नहीं जान सकता और बिना सही रास्ता जाने संसाररूपी ऊबड़-खाबड़ कठिन राह को कैसे पार किया जा सकता है ! बिना गुरु के परब्रह्म परमात्मा से अनन्य प्रीति कैसे हो सकती है ! बिना गुरु के काल से कैसे बचा जा सकता है ! काल से बचने का उपाय समर्थ परब्रह्म परमात्मा की प्रसन्नता है और वह गुरुकृपा से ही प्राप्त होती है । टीलाजी कहते हैं कि गुरु महाराज को आगे करके बराबर उनकी शरण का आश्रय लेकर चल, साधना कर जिससे परब्रह्म परमात्मा तुझको कृतार्थ कर दें ।'

(पृष्ठ ११ से 'संतवाणी से सहजो बनी महान' का शेष)

जन्म दिया लेकिन गुरु ने जन्म-मरण से पार कर दिया । देह भी अपनी सगी नहीं है । वह भी बेवफा हो जाती है, फिर भी जो साथ नहीं छोड़ता उसका नाम ईश्वर है ।'

सहजो की वाणी पुस्तकों में छपी और लोग उसका आदर करते हैं । कई कन्याओं की जिंदगी उसने ऊँचाइयों को छूनेवाली बना दी । कई महिलाओं के पाप-ताप, शोक हर के उनके अंदर भक्ति भरनेवाली वह ११ साल की कन्या एक महान योगिनी हो गयी । बस एक बार संत की वाणी मिली तो दुल्हन बनी हुई सहजो महान योगिनी बन गयी । यहाँ तो चाहे सौ-सौ जूते खायें तमाशा घुसके देखेंगे । तमाशा यही है कि इधर-उधर लल्लू-पंजुओं की खुशामद करके मारे जा रहे हैं । हाय राम ! कब आयेगी सूझ ? ❑

भगवद्-उपासना के आठ स्थान

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

भगवान श्रीकृष्ण ने भागवत में कहा कि मेरी उपासना के आठ स्थान हैं। उनमें से किसीमें भी लग गये तो भगवद्रस, भगवत्प्रीति, भगवत्-तृप्ति, भगवन्माधुर्य में प्रवेश मिल जाता है।

अर्चायां स्थण्डिलेऽग्नौ वा सूर्ये वाप्सु हृदि द्विजे।
द्रव्येण भक्तियुक्तोऽर्चेत् स्वगुरुं माममायया॥

...'भक्तिपूर्वक निष्कपट भाव से अपने पिता एवं गुरुरूप मुझ परमात्मा की पूजा की सामग्रियों के द्वारा मूर्ति में, वेदी में, अग्नि में, सूर्य में, जल में, हृदय में अथवा ब्राह्मण में - चाहे किसीमें भी आराधना करे।'

(श्रीमद् भागवत : ११.२७.९)

१. मूर्ति : मुझ चैतन्य को पाने-जानने के लिए पूजा की सामग्रियों द्वारा देवी-देवता, भगवान, ब्रह्मज्ञानी गुरु आदि की जो मूर्ति है उसमें मेरी पूजा की जा सकती है। मेरी मूर्ति की सेवा-पूजा करना और उसको एकटक देखते हुए एकाग्र होना, यह भी मेरी उपासना है।

२. वेदी : वेदी में आहुति देकर (यज्ञ के द्वारा) वातावरण में शुभ संकल्प फैलाना, **ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय इदं न मम।** 'यह इन्द्र के लिए है, मेरा नहीं।' **ॐ वरुणाय स्वाहा, इदं वरुणाय इदं न मम।** 'यह वरुण के लिए है, मेरा नहीं।' 'यह कुबेर के लिए है, मेरा नहीं...' इस प्रकार ममता हटायें। तो ममता हटाने की रीति जो यज्ञों में बतायी गयी, वह भी मेरी उपासना है।

'मेरा नहीं है'... तो एक तो 'मैं' और दूसरा 'मेरा' ये दोनों माया है। 'वस्तु मेरी नहीं है, फिर शरीर को जो 'मैं' मानता हूँ वह 'मैं' मैं नहीं हूँ। शरीर के बाद भी जो रहता है, वह चैतन्य मेरा परमात्मा है।'- इस ढंग की समझ से विधि के द्वारा मेरी पूजा होती है।

३. अग्नि : भगवान बोलते हैं कि अग्नि देवता के ध्यान के द्वारा तथा घृतमिश्रित हवन-सामग्रियों से आहुति देकर की हुई पूजा भी मेरी पूजा है।

४. सूर्य : अर्घ्यदान, उपस्थान (उपासना, पूजा के निमित्त निकट जाना, सामने आना) तथा आँखें बंद करके सूर्यनारायण का ध्यान करना, इससे बुद्धि भी विकसित होती है और भगवत्साधना भी मानी जाती है।

५. जल : भगवान कहते हैं कि जलतत्त्व भी मेरा ही स्वरूप है। जल में तर्पण आदि से मेरी उपासना करनी चाहिए। जब मुझे कोई भक्त हार्दिक श्रद्धा से जल भी चढ़ाता है, तब मैं उसे बड़े प्रेम से स्वीकार करता हूँ। वह भक्त जल में एकदृष्टि (परमात्मदृष्टि) करता है अथवा **'गंगे च यमुने चैव...'** कह के पुण्यनदियों का आवाहन करके उस जल से स्नान करता है, **'केशवाय नमः, नारायणाय नमः...'** कहकर आचमन लेता है, पंचामृत आदि बनाता है तो जल में यह जो भगवद्भाव है, आदरभाव है उससे शांति, पुण्याई होती है। यह भी मेरी पूजा का एक तरीका है।

६. हृदय : हृदय में मेरी पूजा करें। श्वासोच्छ्वास के साथ मेरा नामजप करें।

बोले : भगवान हृदय में हैं तो हृदय बड़ा

और भगवान छोटे !

अरे ! भगवान हृदय में उतने लगते हैं लेकिन भगवान की सत्ता अनंत ब्रह्माण्डों में व्याप्त है। बीज छोटा लगता है पर उसमें संस्कार कैसे हैं कि बड़ा वटवृक्ष भी छुपा है उसमें ! एक बीज में कितने वृक्ष छुपे हैं, सारे विज्ञानी मिलकर उसका गणित नहीं लगा सकते, ब्रह्माजी भी नहीं लगा सकते। ऐसे ही एक मनुष्य से कितने मनुष्यों की परम्परा चलेगी, ब्रह्माजी नहीं बता सकते। हरि अनंत हैं तो हरि की हर चीज भी तो अनंत की खबर दे रही है। एक बीज का अंत हो जायेगा क्या ? एक गुठली बोयी आम की, उससे आम का वृक्ष बना और कल्पना करो कि हजार फल लगे उसमें। अब हजार फल खा लो और गुठलियाँ बो दो। फिर हजार पेड़ हुए। उन हजार पेड़ों की गुठलियाँ बो दो, अब उनकी संख्या कितने तक पहुँच सकती है ? एक आम का या एक वटवृक्ष का बीज कितने बीज दे सकता है, इसका कोई अंत है क्या ? तो जैसे यह बीज है वैसे ही अनंत की हर चीज अनंत की खबर है। तो आप अपने को जन्मने-मरनेवाला मत मानिये। जन्मने-मरनेवाले शरीर को जो सत्ता दे रहा है, आप उस चैतन्य को 'मैं' रूप में जानिये। इसलिए यह उपासना बताते हैं भगवान।

तो भगवान कहते हैं कि हृदय में मेरा ध्यान करे - चतुर्भुजी रूप का, द्विभुजी रूप का अथवा श्वास अंदर जाय तो उसको देखे, बाहर आये तो गिनती करे, इस प्रकार अंतरंग ध्यान करे। सुख आया, दुःख आया, काम आया, क्रोध आया... इनको देखे, इनके साथ जुड़े नहीं तो यह भी एक प्रकार की मेरी अंतरंग उपासना है। एक-से-एक प्रभावशाली उपासनाएँ हैं भगवान की।

७. ब्राह्मण : ब्राह्मणों में मेरी भावना करे, उनमें मेरे स्वरूप को देखे। जो सदाचारी, संयमी ब्राह्मण हैं, वे भगवत्स्वरूप हैं। जो ब्रह्म को जानने का यत्न करते हैं और जिनका खानपान, व्यवहार सात्त्विक है, ऐसे ब्राह्मण देवता में भी मेरा भाव करे और उनके सद्गुण ले।

८. सद्गुरु : आठवाँ पूजा-स्थान बताते हुए भगवान बोलते हैं कि इन सब पूजाओं की पराकाष्ठा यह है कि जिन्होंने मुझ सच्चिदानंद को पाया है, जिनको मेरा साक्षात्कार हुआ है, ऐसे अवतार लेकर जिनको मैं पूजता हूँ, ऐसे आत्मवेत्ता सद्गुरु तो मेरा स्वरूप ही हैं। मैं सद्गुरु मेरे भी आदरणीय-पूजनीय होते हैं। मैं अवतार लेकर उनका चेला बनता हूँ। ऐसे सद्गुरु की आज्ञा में जिसने तन को, मन को, जीवन को लगा दिया, वह तो मेरे साथ एकाकारता कर लेता है।

पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान...

सद्गुरु के वचन में शबरी लग गयी, पूरणपोड़ा लग गया और वे भगवान के साथ एकाकार हो गये। तारक सद्गुरु मिल गये तो आप सारी उपासनाओं की ऊँचाई पर आ जाओगे। संत कबीरजी भी कहते हैं :

सद्गुरु मेरा सूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट ॥

'मैं मराठा हूँ... मैं मार्ई हूँ... मैं भाई हूँ... मैं दुःखी हूँ... मैं सुखी हूँ...' - यह भ्रम हो गया है। सुख-दुःख होते हैं मन को, मैं उनको जाननेवाला हूँ। 'ऐसा दृश्य दिखे, ऐसा दिखे, ऐसा दिखे...' वह तो मन को दिखेगा, तेरे को क्या मिलेगा ? तो कभी-कभी मान्यताएँ और सामाजिक वातावरण ऐसा हमको उलझा देता है कि लगता है भगवान को पाना बड़ा कठिन है। लोग सोचते हैं कि 'बापूजी ने बड़ी तपस्या

की । महात्मा बुद्ध ने बड़ी तपस्या की ।' नहीं पता था इसलिए बड़ी गधा-मजदूरी की, इधर-उधर भटके थे, पता चला तो यूँ है । मेरे बड़े बापू (भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) को जो मेहनत करनी पड़ी, उसका सौवाँ हिस्सा मुझे मेहनत नहीं करनी पड़ी । लेकिन फिर भी जो मुझे अनजाने में पापड़ बेलने पड़े, उसका हजारवाँ हिस्सा भी तुम्हें मेहनत नहीं करनी पड़ती और मौज मार रहे हो ! (सामने बैठे सत्संगियों से) तुम्हारे लिए क्या कठिन है ! अब यह सुन रहे हो इसमें क्या कठिन है ? सारी तपस्याओं से जो न मिले वह ऐसे ही मिल रहा है हँसते-खेलते, सुनते ।

हँसिबो खेलिबो धरिबो ध्यान,
अहर्निश कथिबो ब्रह्मज्ञान ।
खावे पीवे न करे मन भंगा,
कहे नाथ मैं तिसके संगा ॥

क्या कठिन है ? नहीं तो रावण सोने की लंका बनाने में सफल हो गया, हिरण्यकशिपु सोने का हिरण्यपुर बनाने में सफल हो गया, ऐसा उनका तप था लेकिन शरीर, मन और बुद्धि तक ही तो पहुँचे ! यह तपोमय बुद्धि, एकाग्रता तो उन्हें मिली किंतु स्वतःसिद्ध जो सुख है वह नहीं मिला । साठ हजार वर्ष तप करके जो पाया उसका आखिर नाश हो गया । अगर इन दोनों सज्जनों को साक्षात्कारी गुरु मिले होते और उनके नजरिये से चले होते तो साल-दो साल में ऐसी चीज पाते कि जिसका कभी नाश नहीं हो सकता । सद्गुरु मिले तो चालीस दिनों में मैंने जो पाया है, उसका कभी नाश नहीं हो सकता । तो भगवान सद्गुरु की महिमा बताते हुए कहते हैं कि ऐसे सद्गुरु की आराधना, पूजा मेरी एकदम सीधी और सहजता में मेरी प्राप्ति करानेवाली पूजा है । ❑

समर्पण

एक बार संत दादूजी अपने शिष्यों के साथ परिभ्रमण कर रहे थे । रास्ते में एक बरसाती नाला पड़ा, जो कि इतना छोटा था कि यात्री लोग बीच में रखे पत्थर के टुकड़े पर पैर टेकते और कूदकर पार हो जाते थे । वह पत्थर किसीने वहाँ से हटा दिया था । नाले में पानी तो कम था किंतु कीचड़ इतना जम गया था कि नाले को पार करना कठिन था । अन्य शिष्य इधर-उधर पत्थर खोजने लगे ताकि गुरुदेव उस पर पैर रखकर पार हो सकें । किंतु रज्जब बोले : ''गुरुदेव ! आप मेरी पीठ पर पैर रखकर उस पार हो जाइये ।'' दादूजी ने कहा : ''नहीं बेटा ! तेरे सब वस्त्र गीले तथा कीचड़ में गंदे हो जायेंगे ।''

रज्जब : ''गुरुदेव ! आपने हमको संसार के कीचड़ से बचाने के लिए कितना कष्ट सहन किया है ! अपना एकांतिक समाधि-सुख एवं ब्रह्मानंद छोड़कर आप समाज में हमारे कल्याण के लिए घूम रहे हैं । संसार के कीचड़ से तो यह कीचड़ अच्छा है और यह नश्वर शरीर आपके काम आ जायेगा तो मेरा जन्म लेना सार्थक हो जायेगा ।''

दादूजी बोले : ''उठो बेटा !''

रज्जबजी कातर स्वर में अनुनय-विनय करने लगे : ''हे पतितपावन गुरुवर ! आज आपके श्रीचरणों से मेरा यह शरीर पावन हो जायेगा । आप कृपा करके मेरी पीठ पर अपने चरण रखकर पार हो जाइये । मेरे शरीर की सार्थकता इसीमें है कि वह आपकी सेवा करता रहे ।'' दादूजी रज्जब की गुरुनिष्ठा, सेवानिष्ठा तथा अनन्य प्रेम देख बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने रज्जब को उठाकर गले लगा लिया । एक शिष्य के लिए इससे बड़ा उपहार और क्या हो सकता है ! ❑

वैदिक मंत्रशक्ति के आगे विज्ञान नतमस्तक

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''ॐकार की महिमा मैंने तो आपको बतायी लेकिन कुछ विज्ञानियों ने 'ॐ' शब्द की महिमा का अध्ययन किया और फिर प्रयोगशाला और लोगों के जीवन में सात-सात वर्ष प्रयोग किया। न्यूयॉर्क, बोस्टन, कैलिफोर्निया में ॐकार थेरैपीवालों ने प्रयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि ॐकार के उच्चारण से पेट की तकलीफें, मस्तिष्क व हृदय की कमजोरी यह सब दूर होता है। लेकिन उन भोगियों को ॐकारस्वरूप ईश्वर से केवल पेट, मस्तिष्क और हृदय ठीक करना है। अभी वहाँ इसका प्रचलन अच्छी तरह से चल पड़ा है।

प्रोफेसर जे. मॉर्गन ने खोजा है कि ॐकार के उच्चारण से पेट, सीने और मस्तिष्क में जो कम्पन होते हैं, आंदोलन होते हैं उनसे मृत कोशिकाएँ जीवित हो जाती हैं और जीवित कोशिकाओं में नवजीवन का संचार होता है तथा नयी.कोशिकाओं का निर्माण होता है। जिनको ईश्वर से लेना-देना नहीं, शरीर ही अपना है ऐसा मानते हैं, ऐसे देहाध्यासियों को भी ॐकार थेरैपी से बहुत फायदे होते हैं लेकिन ॐकार का उच्चारण करने से तो ईश्वर मिलता है, यह महापुरुषों का अनुभव है। ये लोग तो खोजते-खोजते अभी इस नतीजे पर पहुँचे हैं लेकिन हमारे यहाँ तो आते भी ॐ ॐ ॐ... करते हुए हास्य और जाते भी, फिर बीच-बीच में भी। हमारे साधकों को कितना फायदा होता होगा! इनकी मशीनें टूट जायेंगी, नहीं बता सकेंगी। इन बेचारों को पता नहीं कि सात बार ॐकार जपने के बाद इस ब्रह्माण्ड में होते हुए भी इस ब्रह्माण्ड को चीरकर आपकी ॐकार की ध्वनि अनंत ब्रह्माण्डों के साथ एकाकार हो जाती है। इसलिए हमने ॐकार-जप की साधना शुरू करायी है। मशीनें होतीं तो वे तौबा पुकार जातीं, मशीनों में सब कुछ नहीं आता। मशीन स्थूल है न, तो स्थूल को पकड़ती है। जब सूक्ष्म और सूक्ष्मतर को ही मशीनें नहीं पकड़तीं तो सूक्ष्मतम को क्या पकड़ेंगी! ॐ सूक्ष्मतम चिन्मय तत्त्व तक ले जाता है। मेरे साधकों को ॐकार के जप से जो फायदा होता है वह विज्ञानियों की समझ से परे है।

ॐकार की महिमा जितनी ये डॉक्टर समझते हैं उतनी ही नहीं हैं, जितनी मैं समझता हूँ उतनी भी नहीं है अपितु उससे भी ज्यादा है, कई गुना ज्यादा है। कितनी ज्यादा है, मैं वर्णन नहीं कर सकता हूँ। आप जप किये जाओ और रहस्य खोले जाओ।''

आज पूरी दुनिया में वैज्ञानिक ॐकार का प्रयोग कर लोगों के रोग मिटा रहे हैं। मार्गन के अलावा कई अन्य विज्ञानियों ने भी अपने मत दिये हैं :

न्यूयॉर्क के 'कोलम्बिया प्रेसबाइटेरियन' के 'हार्ट इंस्टीट्यूट' में डॉक्टर मरीजों को ऑपरेशन से पहले ॐ का उच्चारण करने को कहते हैं, क्योंकि ॐ के जप से विश्रांति मिलती है। प्रसिद्ध शल्यचिकित्सक नरेश ट्रेहान कहते हैं : ''ऑपरेशन के दौरान ॐ की टेप चलाने से डॉक्टर और स्टॉफ में आत्मविश्वास की भावना आती है और रोगी भी सकारात्मक ढंग से सोचने लगता है।''

मनोचिकित्सक डॉ. संजय चुघ कहते हैं : ''शरीर में तनाव होने से स्टिरोइड हार्मोन्स का स्तर बढ़ जाता है। ऑपरेशन के पूर्व एवं उसके पश्चात् ॐ के उच्चारण, ध्यान आदि से स्टिरोइड

का स्तर कम हो जाता है, जो कि शरीर के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है ।''

'माइंड/बॉडी मेडिकल इंस्टीट्यूट' के अध्यक्ष एवं 'हार्वर्ड मेडिकल स्कूल' के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हर्बर्ट बेन्सन ने ४० वर्ष तक अध्ययन करने के बाद मंत्रोच्चारण, योग, ध्यान की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए कहा : ''आज के युग में यह (मंत्रोच्चारण, योग, ध्यान) और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आज का मनुष्य जब डॉक्टर के पास जाता है तो वह ६० प्रतिशत तनावसंबंधी तकलीफों से ग्रस्त होता है ।''

उपरोक्त शोध करके अब विज्ञान भी भारत के वैदिक मंत्र-विज्ञान के आगे नतमस्तक हो गया है। हमारे शास्त्रों और महापुरुषों ने तो पहले से ही ॐकार की महिमा गायी है। पूज्य बापूजी का एक दिन भी बिना ॐकार उच्चारण के नहीं जाता। रोज उनके द्वारा स्वाभाविक ही ॐ का उच्चारण दिन में कई बार होता है। ४०-४२ वर्षों से पूज्यश्री ॐकार का अलख जगा रहे हैं। सत्संग-प्रवचनों में ॐकार की साधना कराकर पूज्यश्री उसके लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव भी कराते हैं। 'मधुर कीर्तन', 'हरिनाम संकीर्तन', 'ॐ ॐ प्रभुजी ॐ...'- पूज्य बापूजी की पावन मधुर वाणी गुँजाती ॐकार की ये वि.सी.डी., 'मधुमय कीर्तन' डी.वी.डी. श्रोताओं के रोम-रोम को झंकृत कर देती हैं।

उक्त आधुनिक वैज्ञानिकों की खोज इस स्थूल शरीर तक ही सीमित है जबकि हमारे शास्त्रों के अनुसार ॐकार का प्रभाव व्यापक है । मरणोपरांत भी यह जीवात्मा का साथी है। 'श्रीमद् भगवद्गीता' में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है :

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥

'जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षररूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिंतन करता हुआ शरीर का त्याग कर जाता है, वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है ।' **(गीता : ८.१३)**

'सामवेद' के 'संन्यास उपनिषद्' में लिखा है :

यस्तु द्वादशसाहस्रं प्रणवं जपतेऽन्वहम् ।
तस्य द्वादशभिर्मासैः परं ब्रह्म प्रकाशते ॥

'जो मनुष्य प्रणव (ॐ) का प्रतिदिन बारह हजार जप करता है, उसे बारह माह में ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है ।' **(अध्याय २, मंत्र १२३)**

अगर कोई ईमानदारी से लग जाय तो एक वर्ष के अनुष्ठान में परमात्म-प्रकाश हो जाता है। प्रतिदिन ॐकार का बारह हजार बार जप करे व नीच कर्मों का त्याग कर दे तथा ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य बना ले तो एक वर्ष के अंदर ईश्वरप्राप्ति !

महर्षि वेदव्यासजी कहते हैं : **मन्त्राणां प्रणवः सेतुः...** 'ॐ मंत्रों को पार करने के लिए अर्थात् सिद्धि के लिए पुल के सदृश है ।'

गुरु नानकजी ने भी कहा है : **एक ॐकार सति नामु...** यजुर्वेद में आता है : **ॐ खं ब्रह्म ।** 'ॐ (अक्षर) आकाशरूप में ब्रह्म ही संव्याप्त है ।' **(यजुर्वेद : ४०.१७)**

महर्षि पुष्कर कहते हैं : 'परशुरामजी ! प्रणव परब्रह्म है । नाभिपर्यंत जल में स्थित होकर ॐकार का सौ बार जप करके अभिमंत्रित किये गये जल को जो पीता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है ।' **(अग्नि पुराण : अ. २५९)**

(जो जलाशय में स्नान नहीं कर सकते, वे कटोरी में जल लेकर घर पर ही यह प्रयोग कर सकते हैं।)

वैज्ञानिक तो केवल स्थूल शरीर के रोग मिटाने में ॐ की महिमा स्वीकार करते हैं जबकि ॐ पाँचों शरीरों को शुद्धि प्रदान करता है, उनमें ओज-तेज भर देता है। रोगों, विकारों से अंतःशरीर टूट जाता है । उसे यजुर्वेद और अथर्ववेद द्वारा बताये मंत्रों के गुंजन से स्वस्थ कर लिया जाय तो आसानी से चिरस्थायी आयु, आरोग्य और **(शेष पृष्ठ २२ पर)**

ॐकार की महिमा का ग्रंथ : प्रणववाद

(पूज्य बापूजी के सत्संग-अमृत से)

एक सूरदास (प्रज्ञाचक्षु) ब्राह्मण थे धनराज पंडित। वे साधु हो गये। काशी में भगवानदास डॉक्टर बड़ा धर्मात्मा था। धनराज पंडित उसके क्लीनिक पर गये और बोले : ''डॉक्टर साहब ! **ॐ नमो नारायणाय।** मैं भूखा हूँ। आज आपके घर भिक्षा मिल जायेगी क्या ?''

''जरा रुकिये पंडितजी !''

पीछे घर था। पत्नी को बताया तो पत्नी बोली : ''स्नान करके अभी रसोईघर में आयी हूँ। एक घंटा लगेगा।''

डॉक्टर ने कहा : ''पंडितजी ! घूम-फिरकर आइये, एक घंटे के बाद यहाँ भोजन मिल जायेगा।''

''एक घंटा मैं कहाँ लकड़ी टेककर घूमूँगा। आपके क्लीनिक में बैठने की जगह अगर दे सको तो मैं एक घंटा यहीं गुजार लूँगा।''

''अच्छा बैठो।''

वे वहाँ बैठे गये। डॉक्टर बोला : ''ॐकार की बड़ी महिमा है, ऐसा लोग बोलते हैं। क्या ॐकार के विषय में आप कुछ जानते हैं महाराज ?''

''अरे, ॐकार तो आदिमूल परब्रह्म परमात्मा का अपौरुषेय शब्द है। अन्य शब्द टकराव से पैदा होते हैं, यह स्वाभाविक अनहद नाद है।''

वे महात्मा ॐकार पर ऐसा बोले कि डॉक्टर बोला : ''ॐकार पर इतना सारा !...''

''हाँ ! हम क्या, गार्ग्यायन ऋषि ने ॐकार पर इतनी सुंदर व्याख्या की है कि जिसका एक पूरा ग्रंथ है !''

''वह ग्रंथ कहाँ मिलेगा ?''

''अभी नहीं मिलेगा, अप्राप्य है।''

''आप तो उसके श्लोक बोल रहे हैं !''

''हाँ, पहले वह ग्रंथ था। उसके आधार पर हम बोल रहे हैं।''

डॉक्टर प्रतिदिन उन्हें बुलाने लगा। धीरे-धीरे निकटता बढ़ी।

डॉक्टर ने पूछा : ''मैं एक विद्वान बुला लूँ, ताकि आप बोलते जायेंगे और वह लिखता जायेगा ?''

''कोई बात नहीं।'' महात्मा ने कहा।

वे बोलते गये और विद्वान लिखता गया। बाईस हजार श्लोक बोल डाले उन सूरदास ने। थियोसोफिकल सोसायटीवालों ने बाईस हजार श्लोकों का वह ग्रंथ 'प्रणववाद' अपने ग्रंथालय में रखा है। ❑

(पृष्ठ २१ से 'वैदिक मंत्रशक्ति के आगे विज्ञान नतमस्तक' का शेष) पुष्टि प्राप्त की जा सकती है। बाह्य चिकित्सा पूर्ण चिकित्सा नहीं है। यही कारण है कि बाह्य चिकित्सा करते-करते भी किसी-न-किसी रोग से मरीज, मरीज ही बने रहते हैं क्योंकि वे अंतःचिकित्सा से दूर चले जाते हैं, जो कि वैदिक मंत्रों से प्राप्त होती है।

यकृत (लीवर) के रोग एलोपैथी से नहीं मिटते पर पूज्य बापूजी द्वारा दीक्षा के समय 'आशीर्वाद मंत्र' के रूप में दिये जानेवाले वैदिक बीजमंत्र के जप से इसमें अद्भुत फायदा होते देखा-सुना गया है। मंत्रों द्वारा आश्रम से जुड़े भक्तों के जीवन में अद्भुत लाभ प्रत्यक्ष देखे गये हैं। अतः पूर्ण स्वास्थ्य के लिए वैदिक मंत्रों का श्रद्धा-भक्ति से फायदा लेना ही बुद्धिमानी है।

यह भी ध्यान रखें कि रोग, बीमारी, अशांति स्थूल-सूक्ष्म शरीर तक ही सीमित हैं, आप तक उनकी दाल नहीं गलती। आप परमात्मा के अमृतपुत्र हैं। ॐ आनंद, ॐ माधुर्य... ये नश्वर, आप शाश्वत; ये अनित्य, आने-जानेवाले हैं, आप नित्य हैं। ॐ ॐ... आनंद आनंद... आरोग्य आरोग्य... ॐकार को मधुर स्वर में गुनगुनाते जायें और शरीर से स्वस्थ व अपने वास्तविक स्वरूप में मस्त होते जायें। ❑

ॐकार की १९ शक्तियाँ

सारे शास्त्र-स्मृतियों का मूल है वेद । वेदों का मूल गायत्री है और गायत्री का मूल है ॐकार । ॐकार से गायत्री, गायत्री से वैदिक ज्ञान और उससे शास्त्र और सामाजिक प्रवृत्तियों की खोज हुई ।

पतंजलि महाराज ने कहा है :

तस्य वाचकः प्रणवः । 'परमात्मा का वाचक ॐकार है ।' **(पातंजल योगदर्शन, समाधिपाद : २७)**

सब मंत्रों में ॐ राजा है । ॐकार अनहद नाद है । यह सहज में स्फुरित हो जाता है । अकार, उकार, मकार और अर्धतन्मात्रा युक्त ॐ एक ऐसा अद्भुत भगवन्नाम-मंत्र है कि इस पर कई व्याख्याएँ हुईं, कई ग्रंथ लिखे गये फिर भी इसकी महिमा हमने लिखी ऐसा दावा किसीने नहीं किया। इस ॐकार के विषय में ज्ञानेश्वरी गीता में ज्ञानेश्वर महाराज ने कहा है :

ॐ नमो जी आद्या वेदप्रतिपाद्या
जय जय स्वसंवेद्या आत्मरूपा ।

परमात्मा का ॐकारस्वरूप से अभिवादन करके ज्ञानेश्वर महाराज ने ज्ञानेश्वरी गीता का प्रारम्भ किया ।

धन्वंतरि महाराज लिखते हैं कि ॐ सबसे उत्कृष्ट मंत्र है ।

वेदव्यासजी महाराज कहते हैं कि **मंत्राणां प्रणवः सेतुः ।** यह प्रणव मंत्र सारे मंत्रों का सेतु है ।

कोई मनुष्य दिशाशून्य हो गया हो, लाचारी की हालत में फेंका गया हो, कुटुम्बियों ने मुख मोड़ लिया हो, किस्मत रूठ गयी हो, साथियों ने सताना शुरू कर दिया हो, पड़ोसियों ने पुचकार के बदले दुत्कारना शुरू कर दिया हो... चारों तरफ से व्यक्ति दिशाशून्य, सहयोगशून्य, धनशून्य, सत्ताशून्य हो गया हो, फिर भी हताश न हो वरन् सुबह-शाम ३ घंटे ॐकारसहित भगवन्नाम का जप करे तो वर्ष के अंदर वह व्यक्ति भगवद्शक्ति से सबके द्वारा सम्मानित, सब दिशाओं में सफल और सब गुणों से सम्पन्न होने लगेगा। इसलिए मनुष्य को कभी भी अपने को लाचार, दीन-हीन और असहाय मानकर कोसना नहीं चाहिए । भगवान तुम्हारे आत्मा बनकर बैठे हैं और भगवान का नाम तुम्हें सहज में प्राप्त हो सकता है, फिर क्यों दुःखी होना !

रोज रात्रि में तुम १० मिनट ॐकार का जप करके सो जाओ । फिर देखो, इस मंत्र भगवान की क्या-क्या करामात होती है ! और दिनों की अपेक्षा वह रात कैसी जाती है और सुबह कैसी जाती है ! पहले ही दिन फर्क पड़ने लग जायेगा ।

मंत्र के ऋषि, देवता, छंद, बीज और कीलक होते हैं । इस विधि को जानकर गुरुमंत्र देनेवाले सद्गुरु मिल जायें और उसका पालन करनेवाला सत्शिष्य मिल जाय तो काम बन जाता है । ॐकार मंत्र का छंद गायत्री है, इसके देवता परमात्मा स्वयं हैं और मंत्र के ऋषि भी ईश्वर ही हैं ।

भगवान की रक्षण शक्ति, गति शक्ति, कांति शक्ति, प्रीति शक्ति, अवगम शक्ति, प्रवेश अवति शक्ति आदि १९ शक्तियाँ ॐकार में हैं । इसका आदर से श्रवण करने से मंत्रजापक को बहुत लाभ होता है, ऐसा संस्कृत के जानकार पाणिनि मुनि ने बताया है ।

वे पहले महाबुद्धू थे, महामूर्खों में उनकी गिनती होती थी । १४ साल तक वे पहली कक्षा से दूसरी में नहीं जा पाये थे । फिर उन्होंने शिवजी की उपासना की, उनका ध्यान किया तथा शिवमंत्र जपा । शिवजी के दर्शन किये व उनकी कृपा से संस्कृत व्याकरण की रचना की और अभी तक पाणिनि मुनि का संस्कृत व्याकरण पढ़ाया जाता है ।

ॐकार मंत्र में १९ शक्तियाँ हैं :

(१) रक्षण शक्ति : ॐसहित मंत्र का जप करते हैं तो वह हमारे जप तथा पुण्य की रक्षा करता है। किसी नामदान लिये हुए साधक पर यदि कोई आपदा आनेवाली है, कोई दुर्घटना घटनेवाली है तो मंत्र भगवान उस आपदा को शूली में से काँटा कर देते हैं। साधक का बचाव कर देते हैं। ऐसा बचाव तो एक नहीं, मेरे हजारों साधकों के जीवन में चमत्कारिक ढंग से महसूस होता है। 'अरे, गाड़ी उलट गयी, तीन पलटियाँ खा गयी किंतु बापूजी ! हमको खरोंच तक नहीं आयी... बापूजी ! हमारी नौकरी छूट गयी थी, ऐसा हो गया था-वैसा हो गया था किंतु बाद में उसी साहब ने हमको बुलाकर हमसे माफी माँगी और हमारी पुनर्नियुक्ति कर दी। पदोन्नति भी कर दी...' इस प्रकार की न जाने कैसी-कैसी अनुभूतियाँ लोगों को होती हैं। ये अनुभूतियाँ समर्थ भगवान का सामर्थ्य प्रकट करती हैं।

(२) गति शक्ति : जिस योग, ज्ञान, ध्यान के मार्ग से आप फिसल गये थे, जिसके प्रति उदासीन हो गये थे, किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये थे उसमें मंत्रदीक्षा लेने के बाद गति आने लगती है। मंत्रदीक्षा के बाद आपके अंदर की गति शक्ति कार्य में आपको मदद करने लगती है।

(३) कांति शक्ति : मंत्रजप से जापक के कुकर्मों के संस्कार नष्ट होने लगते हैं और उसका चित्त उज्ज्वल होने लगता है। उसकी आभा उज्ज्वल होने लगती है, उसकी मति-गति उज्ज्वल होने लगती है और उसके व्यवहार में उज्ज्वलता आने लगती है।

इसका मतलब ऐसा नहीं है कि आज मंत्र लिया और कल सब छूमंतर हो जायेगा... धीरे-धीरे होगा। एक दिन में कोई स्नातक नहीं होता, एक दिन में कोई एम.ए. नहीं पढ़ लेता, ऐसे ही एक दिन में सब छूमंतर नहीं हो जाता। मंत्र लेकर ज्यों-ज्यों आप श्रद्धा से, एकाग्रता से और पवित्रता से जप करते जायेंगे त्यों-त्यों विशेष लाभ होता जायेगा।

(४) प्रीति शक्ति : ज्यों-ज्यों आप मंत्र जपते जायेंगे त्यों-त्यों मंत्र के देवता के प्रति, मंत्र के ऋषि के प्रति, मंत्र के सामर्थ्य के प्रति आपकी प्रीति बढ़ती जायेगी।

(५) तृप्ति शक्ति : ज्यों-ज्यों आप मंत्र जपते जायेंगे त्यों-त्यों आपकी अंतरात्मा में तृप्ति बढ़ती जायेगी, संतोष बढ़ता जायेगा। जिन्होंने नियम लिया है और जिस दिन वे मंत्र नहीं जपते, उनका वह दिन कुछ ऐसा ही जाता है। जिस दिन वे मंत्र जपते हैं, उस दिन उन्हें अच्छी तृप्ति और संतोष होता है।

जिनका गुरुमंत्र सिद्ध हो गया है उनकी वाणी में सामर्थ्य आ जाता है। नेता भाषण करता है तो लोग इतने तृप्त नहीं होते, किंतु जिनका गुरुमंत्र सिद्ध हो गया है ऐसे महापुरुष बोलते हैं तो लोग सज्जन बनने लगते हैं और बड़े तृप्त हो जाते हैं और महापुरुष के शिष्य बन जाते हैं।

(६) अवगम शक्ति : मंत्रजप से दूसरों के मनोभावों को जानने की शक्ति विकसित हो जाती है। दूसरे के मनोभावों, भूत-भविष्य के क्रियाकलाप को आप अंतर्यामी बनकर जान सकते हो। कोई कहे कि 'महाराज ! आप तो अंतर्यामी हैं।' किंतु वास्तव में यह भगवत्शक्ति के विकास की बात है।

(७) प्रवेश अवति शक्ति : अर्थात् सबके अंतरतम की चेतना के साथ एकाकार होने की शक्ति। अंतःकरण के सर्व भावों को तथा पूर्व जीवन के भावों को और भविष्य की यात्रा के भावों को जानने की शक्ति कई योगियों में होती है। वे कभी-कभार मौज में आ जायें तो बता

सकते हैं कि आपकी यह गति थी, आप यहाँ थे, फलाने जन्म में ऐसे थे, अभी ऐसे हैं । जैसे दीर्घतपा ऋषि के पुत्र पावन को माता-पिता की मृत्यु पर उनके लिए शोक करते देखकर उसके बड़े भाई पुण्यक ने उसे उसके पूर्वजन्मों के बारे में बताया था । यह कथा 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में आती है ।

(८) **श्रवण शक्ति** : मंत्रजप के प्रभाव से जापक सूक्ष्मतम, गुप्ततम शब्दों का श्रोता बन जाता है। जैसे शुकदेवजी महाराज ने जब परीक्षित के लिए सत्संग शुरू किया तो देवता आये । शुकदेवजी ने उन देवताओं से बात की । माँ आनंदमयी का भी देवलोक के साथ सीधा संबंध था। और भी कई संतों का होता है। दूर देश से भक्त पुकारता है कि 'गुरुजी ! मेरी रक्षा करो...' तो गुरुदेव तक उसकी पुकार पहुँच जाती है !

(९) **स्वाम्यर्थ शक्ति** : अर्थात् नियामक और शासन का सामर्थ्य । नियामक और शासक शक्ति का सामर्थ्य विकसित करता है प्रणव का जप ।

(१०) **याचन शक्ति** : याचना की लक्ष्यपूर्ति का सामर्थ्य देनेवाला मंत्र ।

(११) **क्रिया शक्ति** : निरंतर क्रियारत रहने की क्षमता, क्रियारत रहनेवाली चेतना का विकास ।

(१२) **इच्छित अवति शक्ति** : वह ॐ स्वरूप परब्रह्म परमात्मा स्वयं तो निष्काम है किंतु उसका जप करनेवाले में सामनेवाले व्यक्ति का मनोरथ पूरा करने का सामर्थ्य आ जाता है । इसीलिए संतों के चरणों में लोग मत्था टेकते हैं, कतार लगाते हैं, प्रसाद धरते हैं, आशीर्वाद माँगते हैं आदि-आदि । इच्छित अवन्ति शक्ति अर्थात् निष्काम परमात्मा स्वयं शुभेच्छा का प्रकाशक बन जाता है ।

(१३) **दीप्ति शक्ति** : ॐकार जपनेवाले के हृदय में ज्ञान का प्रकाश बढ़ जायेगा। उसकी दीप्ति शक्ति विकसित हो जायेगी ।

(१४) **वाप्ति शक्ति** : अणु-अणु में जो चेतना व्याप रही है उस चैतन्यस्वरूप ब्रह्म के साथ आपकी एकाकारता हो जायेगी ।

(१५) **आलिंगन शक्ति** : अपनापन विकसित करने की शक्ति । ॐकार के जप से पराये भी अपने होने लगेंगे तो अपनों की तो बात ही क्या ! जिनके पास जप-तप की कमाई नहीं है उनको तो घरवाले भी अपना नहीं मानते किंतु जिनके पास ॐकार के जप की कमाई है उनसे घरवाले, समाजवाले, गाँववाले, नगरवाले, राज्यवाले, राष्ट्रवाले तो क्या विश्ववाले भी आनंदित-आह्लादित होने लगते हैं ।

(१६) **हिंसा शक्ति** : ॐकार का जप करनेवाला हिंसक बन जायेगा ? हाँ, हिंसक बन जायेगा किंतु कैसा हिंसक बनेगा ? दुष्ट विचारों का दमन करनेवाला बन जायेगा और दुष्ट वृत्ति के लोगों के दबाव में नहीं आयेगा । अर्थात् उसके अंदर अज्ञान को और दुष्ट संस्कारों को मार भगाने का प्रभाव विकसित हो जायेगा ।

(१७) **दान शक्ति** : वह पुष्टि और वृद्धि का दाता बन जायेगा । फिर वह माँगनेवाला नहीं रहेगा, देने की शक्तिवाला बन जायेगा। वह देवी-देवता से, भगवान से माँगेगा नहीं, स्वयं देने लगेगा ।

एक संत थे । वे ॐकार का जप करते-करते ध्यान करते थे, अकेले रहते थे । वे सुबह बाहर निकलते लेकिन चुप रहते । उनके पास लोग अपना मनोरथ पूर्ण कराने के लिए याचक बनकर आते और हाथ जोड़कर कतार में बैठ जाते । चक्कर मारते-मारते वे संत किसीको थप्पड़ मार देते । वह खुश हो जाता, उसका

काम बन जाता। बेरोजगार को नौकरी मिल जाती, निःसंतान को संतान मिल जाती, बीमार की बीमारी चली जाती। लोग गाल तैयार रखते थे। परंतु ऐसा भाग्य कहाँ कि सबके गाल पर थप्पड़ पड़े ! मैंने उन महाराज के दर्शन तो नहीं किये हैं किंतु जो लोग उनके दर्शन करके आये और उनसे लाभान्वित होकर आये, उन लोगों की बातें मैंने सुनीं।

(१८) भोग शक्ति : प्रलयकाल स्थूल जगत को अपने में लीन करता है, ऐसे ही तमाम दुःखों को, चिंताओं को, खिंचावों को, भयों को अपने में लीन करने का सामर्थ्य होता है प्रणव का जप करनेवालों में। जैसे दरिया में सब लीन हो जाता है, ऐसे ही उसके चित्त में सब लीन हो जायेगा और वह अपनी ही लहरों में लहराता रहेगा, मस्त रहेगा... नहीं तो एक-दो दुकान, एक-दो कारखानेवाले को भी कभी-कभी चिंता में चूर होना पड़ता है। किंतु इस प्रकार की साधना जिसने की है उसकी एक दुकान या कारखाना तो क्या, एक आश्रम या समिति तो क्या, ११००, १२०० या १५०० ही क्यों न हों, सब उत्तम प्रकार से चलती हैं ! उसके लिए तो नित्य नवीन रस, नित्य नवीन आनंद, नित्य नवीन मौज रहती है।

स्वामी रामतीर्थ गाया करते थे :

हर रोज नई इक शादी है,
हर रोज मुबारकबादी है।
जब आशिक मस्त फकीर हुआ,
तो क्या दिलगिरी बाबा !

शादी अर्थात् खुशी। वह ऐसा मस्त फकीर बन जायेगा।

(१९) वृद्धि शक्ति : प्रकृतिवर्धक, संरक्षक शक्ति। ॐकार का जप करनेवाले में प्रकृतिवर्धक और संरक्षक सामर्थ्य आ जाता है। ☐

अमृत-बिंदु

✻ मंदिर के भगवान को तो कोई शिल्पी बनाता है लेकिन अंतरात्मा भगवान को किसी शिल्पी ने नहीं बनाया। अंतरात्मा भगवान हैं तब मंदिर के भगवान के दर्शन, पूजा होती है। जो हृदय-मंदिर के भगवान का सत्संग सुनते हैं, सुनाते हैं, सुनने-सुनाने में भागीदार होते हैं ऐसे लोगों को उदारात्मा भगवान स्नेह करते हैं।

✻ जो छोटे दायरे में फँसे हैं, देखने, सूँघने, खाने, भोगने में फँसे हैं, उन्हें ईश्वर की महिमा और ईश्वर का सुख नसीब नहीं होता है। वे अहंकार में और व्यसनों में तबाह होते जाते हैं। कीट, पतंग, बैल, भैंस आदि-आदि योनियों में जाते हैं। लेकिन जो सद्गुरु के सत्संग में आ जाता है वह अहंकार से, विकारों से बचता हुआ मजहबी दायरों के पार अपने अंतरात्मा में परमात्मा का रस पाता है।

✻ लोभी आदमी का धन अच्छे काम में नहीं लगता। मोही आदमी का मन भगवान में नहीं लगता। अहंकारी आदमी का तन-मन-धन अहंकार में ही खत्म हो जाता है, दुर्गति पाता है। लेकिन धर्मात्मा का तन-मन-धन सत्कर्म में लगकर जीवन धन्य हो जाता है।

✻ जहाँ संत रहते हैं वहाँ तीर्थ होता है। **तरति अनेन इति तीर्थः।** जो पाप के बोझ से मुक्त कर दे, जो दुःख और ताप से मुक्त कर दे और हृदय में भगवद्रस भर दे, वही सच्चा तीर्थ है। जहाँ महात्माओं और संतों की दृष्टि पड़ती है, जहाँ महात्मा को छूकर हवाएँ चलती हैं वह जगह तीर्थ हो जाती है। **- पूज्यश्री**

मंत्रदीक्षा महिमा

मंत्रदीक्षा क्यों ?

भगवान श्रीकृष्ण ने 'श्रीमद् भगवद्गीता' में कहा है : **यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।** 'यज्ञों में जपयज्ञ मैं हूँ ।'

भगवान श्रीराम कहते हैं :

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा ।
पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥

(श्री रामचरितमानस)

मेरे मंत्र का जप और मुझमें दृढ़ विश्वास- यह पाँचवीं भक्ति है ।

इस प्रकार विभिन्न शास्त्रों में मंत्रजप की अद्भुत महिमा बतायी गयी है, परंतु यदि मंत्र किन्हीं ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु से दीक्षा में प्राप्त हो जाय तो उसका प्रभाव अनंत गुना होता है । संत कबीरजी कहते हैं :

सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार ।

श्री सद्गुरुदेव की कृपा और शिष्य की श्रद्धा, इन दो पवित्र धाराओं के संगम का नाम ही 'दीक्षा' है । भगवान शिवजी ने पार्वतीजी को आत्मज्ञानी महापुरुष वामदेवजी से दीक्षा दिलवायी थी । काली माता ने श्री रामकृष्णजी को ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु तोतापुरी महाराज से दीक्षा लेने के लिए कहा था । भगवान विट्ठल ने नामदेवजी को आत्मवेत्ता सत्पुरुष विसोबा खेचर से दीक्षा लेने के लिए कहा था । भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण ने भी अवतार लेने पर सद्गुरु की शरण में जाकर मार्गदर्शन लिया था । इस प्रकार जीवन में ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु से दीक्षा पाने का बड़ा महत्त्व है ।

मंत्रदीक्षा से दिव्य लाभ

पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के बाद साधक के जीवन में अनेक प्रकार के लाभ होने लगते हैं, जिनमें १८ प्रकार के प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं :

(१) गुरुमंत्र के जप से बुराइयाँ कम होने लगती हैं । पापनाश व पुण्य-संचय होने लगता है ।

(२) मन पर सुख-दुःख का प्रभाव पहले जैसा नहीं पड़ता ।

(३) सांसारिक वासनाएँ कम होने लगती हैं ।

(४) मन की चंचलता व छिछरापन मिटने लगता है ।

(५) अंतःकरण में अंतर्यामी परमात्मा की प्रेरणा प्रकट होने लगती है ।

(६) अभिमान गलता जाता है ।

(७) बुद्धि में शुद्ध-सात्त्विक प्रकाश आने लगता है ।

(८) अविवेक नष्ट होकर विवेक जागृत होता है ।

(९) चित्त को समाधान, शांति मिलती है; भगवद्रस, अंतर्मुखता का रस और आनंद आने लगता है ।

(१०) आत्मा व ब्रह्म की एकता का ज्ञान प्रकाशित होता है कि मेरा आत्मा परमात्मा का अविभाज्य अंग है ।

(११) हृदय में भगवत्प्रेम निखरने लगता है; भगवन्नाम, भगवत्कथा में प्रेम बढ़ने लगता है ।

(१२) परमानंद की प्राप्ति होने लगेगी और भगवान व भगवान का नाम एक है - ऐसा ज्ञान होने लगता है ।

(१३) भगवन्नाम व सत्संग में प्रीति बढ़ती है ।

(१४) मंत्रदीक्षित साधक के चित्त में पहले की अपेक्षा हिलचालें कम होने लगती हैं और वह समत्वयोग में पहुँचने के काबिल बनता जाता है ।

(१५) साकार या निराकार जिसको भी मानेगा, उसीकी प्रेरणा से उसके ज्ञान व आनंद के साथ और अधिक एकाकारता का एहसास करने लगेगा ।

(१६) दुःखालय संसार में, दुन्यावी चीजों में पहले जैसी आसक्ति नहीं रहेगी ।

(१७) मनोरथ पूर्ण होने लगते हैं ।

(१८) गुरुमंत्र परमात्मा का स्वरूप ही है । उसके जप से परमात्मा से संबंध जुड़ने लगता है ।

इसके अलावा गुरुमंत्र के जप से १५ दिव्य शक्तियाँ जीवन में प्रकट होने लगती हैं।

गुरुमंत्र के जप से उत्पन्न १५ शक्तियाँ

(१) भुवनपावनी शक्ति : नाम कमाईवाले संत जहाँ जाते हैं, जहाँ रहते हैं, यह भुवनपावनी शक्ति उस जगह को तीर्थ बना देती है।

(२) सर्वव्याधिनाशिनी शक्ति : सभी रोगों को मिटाने की शक्ति।

(३) सर्वदुःखहारिणी शक्ति : सभी दुःखों के प्रभाव को क्षीण करने की शक्ति।

(४) कलिकाल भुजंगभयनाशिनी शक्ति : कलियुग के दोषों को हरने की शक्ति।

(५) नरकोद्धारिणी शक्ति : नारकीय दुःखों या नारकीय योनियों का अंत करनेवाली शक्ति।

(६) प्रारब्ध-विनाशिनी शक्ति : भाग्य के कुअंकों को मिटाने की शक्ति।

(७) सर्व अपराध-भंजनी शक्ति : सारे अपराधों के दुष्फल का नाश करने की शक्ति।

(८) कर्म सम्पूर्तिकारिणी शक्ति : कर्मों को सम्पन्न करने की शक्ति।

(९) सर्ववेदतीर्थादिक फलदायिनी शक्ति : सभी वेदों के पाठ व तीर्थयात्राओं का फल देने की शक्ति।

(१०) सर्व अर्थदायिनी शक्ति : सभी शास्त्रों, विषयों का अर्थ व रहस्य प्रकट कर देने की शक्ति।

(११) जगत आनंददायिनी शक्ति : जगत को आनंदित करने की शक्ति।

(१२) अगति गतिदायिनी शक्ति : दुर्गति से बचाकर सद्गति कराने की शक्ति।

(१३) मुक्तिप्रदायिनी शक्ति : इच्छित मुक्ति प्रदान करने की शक्ति।

(१४) वैकुंठ लोकदायिनी शक्ति : भगवद्धाम प्राप्त कराने की शक्ति।

(१५) भगवत्प्रीतिदायिनी शक्ति : भगवान की प्रीति प्रदान करने की शक्ति।

पूज्य बापूजी दीक्षा में ॐकार युक्त वैदिक मंत्र प्रदान करते हैं, जिससे ॐकार की १९ प्रकार की अन्य शक्तियाँ भी प्राप्त होती हैं। उनकी विस्तृत जानकारी आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'भगवन्नाम-जप महिमा' में दी गयी है।

पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेकर भगवन्नाम-मंत्र का नियमित जप करनेवाले भक्तों को उपरोक्त प्रकार के अनेक-अनेक लाभ होते हैं, जिसका पूरा वर्णन करना असम्भव है। **रामु न सकहिं नाम गुन गाई।**

विज्ञानी बोलते हैं ॐकार से जिगर, मस्तक और पेट के रोग मिटते हैं। इन भोगियों को पता ही क्या योगियों के अनुभव का !

इसलिए हे मानव ! उठ, जाग और पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु से मंत्रदीक्षा प्राप्त कर... नियमपूर्वक जप कर... फिर देख, सफलता तेरी दासी बनने को तैयार हो जायेगी ! ❐

बोधायन ऋषि प्रणीत

दरिद्रतानाशक प्रयोग

२८ दिन (४ सप्ताह) तक सफेद बछड़ेवाली सफेद गाय के दूध की खीर बनायें। खीर बनाते समय दूध को ज्यादा उबालना नहीं चाहिए। चावल पानी में पकायें, फिर दूध डालकर एक-दो उबाल दे दें। उस खीर का सूर्यनारायण को भोग लगायें। सूर्यनारायण का स्मरण करें और खीर को देखते-देखते एक हजार बार ॐकार का जप करें। फिर स्वयं भोग लगायें। जप के प्रारम्भ में यह विनियोग बोलें : **ॐकार मंत्रः, गायत्री छंदः, भगवान नारायण ऋषिः, अंतर्यामी परमात्मा देवता, अंतर्यामी प्रीत्यर्थे, परमात्मप्राप्ति अर्थे जपे विनियोगः।** इससे ब्रह्मचर्य की रक्षा होगी, तेजस्विता बढ़ेगी तथा सात जन्मों की दरिद्रता दूर होकर सुख-सम्पदा की प्राप्ति होगी।

विघ्न-बाधा निवारक प्रयोग

हल्दी और चावल पीसकर उसके घोल से घर के प्रवेश-द्वार पर 'ॐ' बना दें। यह घर को बाधाओं से सुरक्षित रखने में मदद करता है। केवल हल्दी के घोल से भी 'ॐ' लिखें तो यही फल प्राप्त होगा।

देवशयनी एकादशी

(११ जुलाई)

युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा : भगवन् ! आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ? उसका नाम और विधि क्या है ? यह बतलाने की कृपा करें ।

भगवान श्रीकृष्ण बोले : राजन् ! आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम 'देवशयनी' है । मैं उसका वर्णन करता हूँ । वह महान पुण्यमयी, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करनेवाली, सब पापों को हरनेवाली तथा उत्तम व्रत है । देवशयनी एकादशी के दिन जिन्होंने कमल पुष्प से कमललोचन भगवान विष्णु का पूजन तथा एकादशी का उत्तम व्रत किया है, उन्होंने तीनों लोकों और तीनों सनातन देवताओं का पूजन कर लिया ।

'हरिशयनी एकादशी' के दिन मेरा एक स्वरूप राजा बलि के यहाँ रहता है और दूसरा क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या पर तब तक शयन करता है, जब तक आगामी कार्तिक की एकादशी नहीं आ जाती । अतः आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ला एकादशी तक मनुष्य को भलीभाँति धर्म का आचरण करना चाहिए । जो मनुष्य इस व्रत का अनुष्ठान करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है । इस कारण यत्नपूर्वक इस एकादशी का व्रत करना चाहिए । एकादशी की रात में जागरण करके शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले भगवान विष्णु की भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिए । ऐसा करनेवाले पुरुष के पुण्यों की गणना करने में चतुर्मुख ब्रह्माजी भी असमर्थ हैं । राजन् ! जो इस प्रकार भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाली सर्वपापहारिणी एकादशी के उत्तम व्रत का पालन करता है, वह जाति से चाण्डाल होने पर भी संसार में सदा मेरा प्रिय करनेवाला है । जो मनुष्य दीपदान, पलाश के पत्ते पर भोजन और व्रत करते हुए चौमासा व्यतीत करते हैं, वे मेरे प्रिय हैं । चौमासे में भगवान विष्णु योगनिद्रा - समाधि में शयन करते हैं, इसलिए मनुष्य को भूमि पर शयन करना चाहिए । सावन में साग, भादों में दही, आश्विन में दूध और कार्तिक में दाल का त्याग कर देना चाहिए । जो चौमासे में ब्रह्मचर्य का पालन करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है । राजन् ! एकादशी के व्रत से ही मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है, अतः सदा इसका व्रत करना चाहिए, कभी भूलना नहीं चाहिए । 'देवशयनी' और 'बोधिनी' के बीच में जो कृष्ण पक्ष की एकादशियाँ होती हैं, गृहस्थ के लिए वे ही व्रत रखने योग्य हैं - अन्य मासों की कृष्णपक्षीय एकादशियाँ गृहस्थ के रखने योग्य नहीं होतीं । उन्हें शुक्ल पक्ष की सभी एकादशियाँ करनी चाहिए ।

('पद्म पुराण' से) ❑

व्रत, पर्व और त्यौहार

२२ जून : बुधवारी अष्टमी (२८-१० से)
२७ जून : योगिनी एकादशी
२८ जून व १२ जुलाई : भौमप्रदोष व्रत (कर्जमुक्ति हेतु; देखें लोक कल्याण सेतु, अंक-१४८, पृ.४)
३ जुलाई : रविपुष्यामृत योग (२१-४५ तक)
११ जुलाई : देवशयनी एकादशी,
चतुर्मास व्रतारम्भ
१५ जुलाई : गुरुपूर्णिमा

अमृतफल बेल

बेल या बिल्व का अर्थ है :

रोगान् बिलति भिनत्ति इति बिल्वः ।

जो रोगों का नाश करे वह बिल्व । बेल के विधिवत् सेवन से शरीर स्वस्थ और सुडौल बनता है । बेल की जड़, शाखाएँ, पत्ते, छाल और फल, सब-के-सब औषधियाँ हैं । बेल में हृदय का बल और दिमाग को ताजगी देने के साथ सात्त्विक शांति प्रदान करने का भी श्रेष्ठ गुण है । यह स्निग्ध, मुलायम और उष्ण होता है । इसके गूदे, पत्तों तथा बीजों में उड़नशील तेल पाया जाता है, जो औषधीय गुणों से भरपूर होता है । कच्चे और पके बेलफल के गुण तथा उससे होनेवाले लाभ अलग-अलग प्रकार के होते हैं ।

कच्चा बेलफल भूख व पाचनशक्ति बढ़ानेवाला तथा कृमियों का नाश करनेवाला है । यह मल के साथ बहनेवाले जलयुक्त भाग का शोषण करनेवाला होने के कारण अतिसार रोग में अत्यंत हितकर है । इसके नियमित सेवन से कॉलरा (हैजा) से रक्षण होता है ।

पका हुआ बेलफल मधुर, कसैला, पचने में भारी तथा मृदु विरेचक है । इसके सेवन से दस्त साफ होते हैं ।

औषधि-प्रयोग : (१) संग्रहणी : इस व्याधि में पाचनशक्ति अत्यंत कमजोर हो जाती है । बार-बार दुर्गंधयुक्त चिकने दस्त होते हैं । इसके लिए दो बेलफल का गूदा ४०० मि.ली. पानी में उबालकर छान लें । फिर ठंडा कर उसमें २० ग्राम शहद मिलाकर सेवन करें ।

पुरानी संग्रहणी : प्रतिदिन बेल का १०० ग्राम गूदा व २५० ग्राम दूध के तीन सम भाग कर लें और सुबह, दोपहर व शाम को एक-एक भाग को मिलाकर पियें ।

(२) पेचिश : बेलफल आँतों को शक्ति देता है । एक बेल के गूदे से बीज निकालकर सुबह-शाम सेवन करने से पेट में मरोड़ नहीं आती है । उम्र के अनुसार बेल की मात्रा कम-ज्यादा करें ।

(३) जलन : २०० मि.ली. पानी में २५ ग्राम बेल का गूदा व २५ ग्राम मिश्री मिलाने पर जो शरबत बनता है उसे पीने से छाती, पेट, आँख या पाँव की जलन में राहत मिलती है ।

(४) मुँह के छाले : एक बेल का गूदा १०० ग्राम पानी में उबालें । ठंडा हो जाने पर उस पानी से कुल्ले करें । छाले छू हो जायेंगे ।

(५) प्रमेह : बेल एवं बकुल की छाल का २ ग्राम चूर्ण दूध के साथ लें ।

(६) दिमागी थकावट : एक पके बेल का गूदा रात्रि के समय पानी में मिलाकर मिट्टी के बर्तन में रखें । सुबह छानकर इसमें मिश्री मिला लें और प्रतिदिन पियें । इससे दिमाग तरोताजा हो जाता है ।

(७) कान का दर्द, बहरापन : बेलफल को गोमूत्र में पीसकर उसे १०० मि.ली. दूध, ३०० मि.ली. पानी तथा १०० मि.ली. तिल के तेल में मिलाकर धीमी आँच पर उबालें । यह बिल्वसिद्ध तेल प्रतिदिन ४-४ बूँद कान में डालने से कान के दर्द तथा बहरेपन में लाभ होता है ।

(८) उलटी : बेलफल के गूदे का ३० से ५० मि.ली. काढ़ा शहद मिलाकर पीने से त्रिदोषजन्य उलटी में आराम मिलता है ।

गर्भवती स्त्रियों को उलटी व अतिसार होने पर कच्चे बेलफल के २० से ५० मि.ली. काढ़े में सत्तू मिला के देने से राहत मिलती है ।

बार-बार उलटियाँ होने पर अथवा किसी भी चिकित्सा से उलटी में राहत →

गुणकारी घरेलू प्रयोग

माता व बालकों के लिए

✽ **मातृदुग्धवर्धक :** (१) जीरा, सौंफ व मिश्री समभाग लेकर तीनों को अलग-अलग पीस के मिलाकर रख लें । एक चम्मच मिश्रण दूध के साथ दिन में दो बार लेने से माता के स्तनों का दूध खूब बढ़ जाता है ।

(२) माँ के स्तनों पर दिन में दो बार एरण्ड के तेल की नर्मी से मालिश करने से दूध अधिक आने लगता है ।

✽ **गौरवर्ण पुत्र की प्राप्ति हेतु :**

(१) सगर्भावस्था में नौ मास तक भोजन के बाद सौंफ चबाते रहने से संतान का वर्ण निखरता है, सौंदर्य बढ़ता है ।

(२) प्रतिदिन नाश्ते में एक आँवले का मुरब्बा खाने से बच्चे का वर्ण निखरेगा एवं माँ व बच्चा स्वस्थ रहेंगे ।

✽ **शिशु की पाचनशक्ति बढ़ाने के लिए :** माँ यदि दूध पिलाने से पहले एक गिलास पानी पी ले तो शिशु को दूध शीघ्र पच जाता है और उसे उलटी-दस्त आदि नहीं होते ।

अन्य प्रयोग :

✽ **पाचकाग्नि बढ़ाने व उदररोगों में लाभकारी :** आधा से एक ग्राम सोंठ का चूर्ण थोड़े-से गुड़ में मिलाकर भोजन के बाद कुछ दिनों तक खाने से पाचकाग्नि तीव्र होती है । अजीर्ण, अम्लपित्त, पेचिश, पेट का दर्द आदि अनेक उदररोगों में यह प्रयोग लाभदायी है ।

✽ **कफ, जुकाम :** दायें नथुने से श्वास लें और २५ सेकंड रोककर बायें से छोड़ें । मन में 'हरि ॐ... हरि ॐ' जपें । ऐसा आवश्यकतानुसार ५-७ बार करें । इससे कफ, जुकाम दूर होगा ।

कब्जनाशक प्रयोग : कब्ज अनेक रोगों का गढ़ है । कब्ज दूर करने के निम्न उपाय करें :

(१) कच्चे पालक का रस पियें ।

(२) सुबह खाली पेट सेब खाना भी कब्ज में लाभकारी है ।

(३) पके पपीते का सेवन करें ।

(४) बिना नमक व चीनी मिलाये बेल के शरबत का सेवन लाभप्रद है ।

✽ **काले-घने बालों के लिए :** नींबू के ताजे छिलकों को नारियल के तेल में डुबोकर आठ-दस दिन धूप में रख दें । फिर तेल को छानकर बालों की जड़ों में रगड़ें । केश काले और घने होंगे ।

✽ **बेसन का शैम्पू :** साबुन के स्थान पर सप्ताह में दो बार बेसन को पानी में भलीप्रकार घोलकर बालों में लगायें और एक घण्टे बाद आँवले के पानी से धो लें । बालों की हर प्रकार की गंदगी साफ होकर वे चमकीले एवं मुलायम होंगे । सिर की खाज व फुंसियाँ भी जल्दी ठीक होंगी ।

✽ **दाह या जलन :** करेले के पत्तों को बारीक पीसकर पेस्ट बना लें । उसे तलवों व हथेली पर लगाने से जलन समाप्त हो जाती है । गाय के घी या अरण्डी के तेल से पैर के तलवों में मर्दन करने से अथवा सुबह नंगे पैर हरियाली पर घूमने से भी दाह या जलन समाप्त हो जाती है । ❐

⟶ न मिलने पर बेलफल के गूदे का पाँच ग्राम चूर्ण चावल के धोवन के साथ लेने से आराम मिलता है, साथ ही यह संग्रहणी, प्रवाहिका व अतिसार में भी लाभकारी होता है ।

(९) पाचन-रोग : पके हुए बेलफल का गूदा निकालकर उसे छाया में सुखा लें । फिर पीसकर चूर्ण बनायें । इस चूर्ण को छः महीने तक ही प्रयोग में लाया जा सकता है । इसमें पाचकतत्त्व पूर्णरूप से समाविष्ट होते हैं । आवश्यकता पड़ने पर २ से ५ ग्राम चूर्ण पानी में मिलाकर सेवन कर सकते हैं । ❐

आनंदमयी माँ ने भेजा बापूजी के पास

सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि-कोटि वंदन !

मुझे पहले आनंदमयी माँ ने अपने चरणों में बैठाकर मंत्रदीक्षा दी थी। ढाई साल तक माँ का सान्निध्य मिला, उसके बाद माँ ब्रह्मलीन हो गयीं। मैं जब अंतिम समय माँ से मिली तो माँ ने मुझसे कहा : 'बेटी ! तू हर समय प्रभु के सुमिरन में रहना, अपनी साधना को सतत बढ़ाते रहना ।' उनकी समाधि के पश्चात् मैं उनकी याद में बहुत रोती और दुःखी व उदास रहने लगी। दिसम्बर १९८९ में मुझे माँ ने सपने में कहा : 'बेटी ! तू पूज्य बापूजी के चरणों में जा। तेरी शेष साधना वहाँ पूरी होगी। मुझे बापूजी में देख। मैं और बापू भिन्न नहीं हैं।' तब मैंने बापूजी से दीक्षा ली। उसके बाद तो बहुत आध्यात्मिक अनुभव हुए। आनंदमयी माँ के श्रीचरणों में जाने से मुझे जो आत्मिक आनंद मिलता था, वही आनंद मुझे पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य में मिलने लगा।

मेरी १०० शिष्याएँ थीं, जिनको मैंने मंत्रदीक्षा दी थी पर बापूजी के दर्शन के बाद यह एहसास हुआ कि **'पूज्य बापूजी ही एक ऐसे सद्गुरु हैं जो सबका कल्याण एवं मार्गदर्शन कर सकते हैं। लोगों की आध्यात्मिक उन्नति करा सकते हैं।'** मैंने अपनी समस्त शिष्याओं को ले जाकर पूज्य बापूजी से दीक्षा दिला दी। मैं और मेरी शिष्याएँ ऐसे सद्गुरु को पाकर धन्य हो गयीं। सचमुच वे लोग बड़े भाग्यशाली हैं जो बापूजी जैसे महापुरुषों के चरणों में पहुँच पाते हैं। मैं जीवन भर बापूजी की ऋणी रहूँगी। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी जो आध्यात्मिक यात्रा माँ के जाने से बीच में छूट गयी थी, वह बापूजी पूरी करवा देंगे। बापूजी के श्रीचरणों में अपार श्रद्धा, अपार विश्वास व पूर्ण शरणागति के साथ अनंत-अनंत प्रणाम !

– कमल देवी, ओशिवारा, अँधेरी (मुंबई)।
मो. नं. : ९३२४१५३८९९.

सच्ची पुकार से प्रकटे बापूजी

अनंत ब्रह्मांडनायक परम पूज्य मेरे सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में मेरे कोटि-कोटि प्रणाम !

बापूजी की आज्ञानुसार मैंने एक वर्ष का ॐकार का मौन अनुष्ठान किया था। जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे वैसे-वैसे ही मैं हृदय से गुरुदेव के समीप हो रहा था, पर मौन-मंदिर में होने से उनके दर्शनों के लिए तड़पता था। एक दिन यह उत्कंठा बहुत तीव्र हो उठी। आँखों से अश्रु थम नहीं रहे थे। मेरा हृदय अत्यंत व्याकुल हो गुरुदेव को पुकारने लगा, कंठ भर आया। 'हे गुरुदेव ! आपसे मिलने को यह जीव तड़प रहा है, मैं यह कैसे बताऊँ ! माँ के न मिलने पर जो स्थिति हिरनी के बच्चे की होती है वही स्थिति मेरी है। हे मेरे सद्गुरुदेव... हे मेरी गुरुमाऊली.... !'

मेरे हर श्वास में इन पंक्तियों का बार-बार गान हो रहा था और मैं इस भाव में खो गया। मैंने जैसे ही आँख खोल के देखा तो पूरे कमरे में दिव्य अलौकिक प्रकाश फैला है और वातावरण सुगंध से भर गया है ! बापूजी की अमित तेजस्वी सुंदर छवि मेरे सामने मेरी छाती जितनी ऊँचाई पर प्रकट हो गयी ! बापूजी के पावन श्रीविग्रह के दर्शन हो रहे थे। मैं आश्चर्यचकित होकर स्तब्ध रह गया। दर्शन से मेरा हृदय परम शांत हो गया, अंग-अंग पुलकित हो उठे। मुँह से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था। अविरत अश्रुधारा बह रही थी। बापूजी मेरी तरफ कृपापूर्ण दृष्टि से निहार रहे थे। बापूजी ने मधुर व गम्भीर वाणी में कहा : ''भोजन पा ले अब।''

भगवान श्रीकृष्ण का प्रेमावतार था किंतु मेरी गुरुमाऊली का तो प्रेम-दयावतार है।

इस अनुष्ठान से मुझे सच्चे सुख का आस्वाद मिला। इसके आगे स्वर्ग के सुख और धरती के सारे भोगों के सुख तुच्छ हैं। इसलिए एक साल एक दिन के बराबर लगा। विकारों की तथा बाहर के सुखों की गुलामी छूट गयी। मेरे जीवन की काया ही पलट गयी। शरीर के सम्पूर्ण रोग नष्ट होकर शरीर और मन निरोगी हो गये हैं। सद्गुरु माऊली के श्रीचरणों में मेरे अनंत-अनंत प्रणाम !

– संजय गणपतराव मोरे, नांदेड़ (महा.)।
मो.नं. : ९८६०३७४२७०.

मेरे गुरुदेव के लिए सब सम्भव है

विश्ववंदनीय, सबके रक्षक, सबके पोषक सद्गुरुदेव पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में अनंत-अनंत प्रणाम !

मैं एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश हूँ। मैंने परम पूज्य बापूजी से नैमिषारण्य में दीक्षा ली थी। दीक्षा के बाद मुझे एहसास हुआ कि जीवन में सद्गुरु की कितनी आवश्यकता है। मनुष्य, जीवन में दूसरों के साथ तो न्याय कर लेता है किंतु अपने साथ वास्तविक न्याय किस प्रकार करना चाहिए यह तो दीक्षा के बाद ही पता चलता है।

वैसे तो मुझ पर गुरुदेव की असीम कृपा हमेशा रही, परंतु मैं अपने जीवन की एक घटना में पूज्य बापूजी की कृपा की अनुभूति कभी न भूल पाऊँगा।

मैं जनवरी २००६ में विशेष न्यायाधीश (भ्रष्टाचार निवारण), गोरखपुर के पद पर कार्यरत था। एक दिन न्यायालय-कार्य के दौरान कुर्सी पर बैठे-बैठे ही मैं अचानक बेहोश होकर गिर गया। मुझे याद है, बेहोश होते समय जब मैं कुर्सी से गिर रहा था तो मुझे लगा कि सफेद वस्त्रों में किसी दिव्य शक्ति ने मुझे अपनी गोद में उठा लिया है। जब होश आया तो मैंने अपने-आपको एक हृदयरोग विशेषज्ञ मित्र के नर्सिंग होम में पाया।

उस समय मेरा रक्तचाप घटकर ४०/६० हो गया था जो कि सामान्य से बहुत ही कम था। इस अवस्था में मरीज का बचना असम्भव होता है।

परंतु एकाएक हृदयरोग विशेषज्ञ ने देखा कि मेरा रक्तचाप अपने-आप सामान्य हो गया है। वे सबसे कहने लगे कि 'मुझे बड़ा आश्चर्य लग रहा है कि बिना किसी उपचार के इनका रक्तचाप सामान्य कैसे हो गया !'

मैंने कहा : ''यह आप डॉक्टरों की समझ के बाहर की बात है। गिरते समय जिस दिव्य आत्मा ने मुझे गोद में उठाया था, वे मेरे गुरुदेव ही थे। योगनिष्ठ ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की चेतना सर्वत्र व्याप्त होती है, उनके लिए यह असम्भव नहीं है। अपने शिष्यों को बचाने के लिए वे ऐसा कर सकते हैं।''

मुझे इस बात का गर्व है कि ऐसे ब्रह्मनिष्ठ योगसामर्थ्यसम्पन्न सद्गुरुदेव मुझे प्राप्त हुए हैं।

– दीपक कुमार निगम
वरिष्ठ अपर जिला न्यायाधीश (सेवानिवृत्त)
लखनऊ (उ.प्र.)। ❐

'ऋषि प्रसाद' की सेवा से...

मैं पहले एक छोटी-सी कम्पनी में काम करता था, कुछ समय बाद पार्टनरशिप में एक फर्म खोली जिसमें बहुत घाटा हुआ। आर्थिक स्थिति इतनी खराब हुई कि मकान का किराया देने तक के पैसे नहीं थे। मैं बहुत चिंतित व परेशान रहता था।

एक साधक भाई मुझे पूज्य बापूजी के सत्संग में ले गये। सत्संग सुनने से ऐसा आनंद आया कि सारी चिंताएँ दूर हो गयीं। 'भगवन्नाम ही जीव का एकमात्र सहारा है, रक्षक है।' यह सोचकर मैंने बापूजी से दीक्षा ले ली और मंत्रजप करने लगा। साझेदारी का व्यवसाय छोड़कर निजी व्यवसाय शुरू किया। धीरे-धीरे काम मिलने लगा, स्थिति सुधरने लगी। एक गुरुभाई ने कहा कि 'यदि तुम सुखमय जीवन जीना चाहते हो तो 'ऋषि प्रसाद' की सेवा में लग जाओ।' मैंने तुरंत संकल्प लिया और सेवा में जुट गया। उसके बाद मेरे जीवन में उन्नति-ही-उन्नति होती गयी।

मेरी आर्थिक अवदशा पूर्णतया दूर हो गयी। शादी के १० साल बाद भी मुझे कोई संतान नहीं थी। मेरी पत्नी ने 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनाने शुरू किये, जिसके प्रभाव से उसने एक बालिका को जन्म दिया।

पूज्य बापूजी की कृपा से आज मेरे पास सब कुछ है। अभी मैं 'ऋषि प्रसाद सेवा मंडल' चलाता हूँ और खुद को बड़भागी मानता हूँ कि 'ऋषि प्रसाद' के द्वारा लोगों तक बापूजी का सत्संग पहुँचाने की सेवा करने का सौभाग्य मुझे मिल रहा है। मुझे बड़ा आनंद आता है जब लोगों को पूज्य बापूजी की महिमा सुनाता हूँ। ब्रह्मस्वरूप पूज्य सद्गुरुदेव भगवान के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन !

– कृष्णानंद तिवारी, अंबरनाथ,
थाना (महा.)। मो. : ९३२२९४८९०३. ❐

(‘ऋषि प्रसाद’ प्रतिनिधि)

विदिशावासियों को सत्संग-दर्शन का लाभ देकर **२८ अप्रैल** को पूज्य बापूजी **भोपाल** आश्रम पधारे। यहाँ के भक्तों को आश्रम में शाम ५ से ७ बजे तक सत्संग का लाभ मिला। तत्पश्चात् बापूजी ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। **३० अप्रैल व १ मई** को **साहिबाबाद** में विशाल सत्संग-आयोजन हुआ । मार्ग में **सीलमपुर आश्रम** में भी भेंट देते हुए पूज्यश्री ने वहाँ उपस्थित साधकों को परितृप्त किया। यहाँ तपस्या का बहुआयामी विश्लेषण करते हुए पूज्यश्री बोले : ''निंदा सहते हुए भी सेवाकार्य में लगे रहना यह भारी तपस्या है। अभावग्रस्त होते हुए भी मुस्करा के जीना, बचपन में ही भगवान के रास्ते लगना, बलवान होते हुए भी अपना बिगाड़नेवाले को दंड न देना - यह भी भारी तपस्या है। दरिद्र होते हुए भी सत्कर्म में कुछ-न-कुछ दान-पुण्य करना यह बड़ी तपस्या है । महापुरुषों के सम्पर्क में आकर बुद्धि को भगवन्मयी बनाना यह परम तपस्या है।''

१ मई की रात पूज्यश्री **मेरठ (उ.प्र.)** पहुँचे तो लम्बे समय से यहाँ प्रतीक्षा कर रहे साधकों को देख बापूजी प्रसन्न हुए और संत-दर्शन के मूल्य-महत्त्व से अवगत इन श्रद्धालुओं को दर्शन-सत्संग अमृत से परितृप्त किया। यहाँ साधु के श्रृंगार का वर्णन करते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''साधु का श्रृंगार होता है चंदन, केसर, कुमकुम आदि से लेकिन दृष्टि ललाट पर होती है। इससे शिवनेत्र, ज्ञाननेत्र सक्रिय होता है। ईश्वर के साथ तादात्म्य करके ईश्वरीय संदेश, ईश्वरीय शांति और ईश्वरप्रसादजा बुद्धि जागृत हो ऐसा श्रृंगार साधु का श्रृंगार है।''

२ मई को **मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)** के साधक-भक्तों के आग्रह पर एक सत्र का कार्यक्रम उन्हें मिला। आश्रम में उपस्थित जन-समुदाय को सत्संग-अमृत का पान कराकर बापूजी शाम को हरिद्वार पहुँचे।

३ से १० मई तक **हरिद्वार (उत्तराखंड)** में पूज्य बापूजी का एकांतवास रहा। सत्संगियों का ज्ञानवर्धन करते हुए बापूजी बोले : ''भगवान ने आपको अपनी खुशामद सुनने के लिए पैदा नहीं किया है। भगवान ने आपको अपना प्रेमी बनाने, अपने आत्मस्वरूप में जगाने के लिए दुनिया की व्यवस्था की है।''

१० से १३ मई तक **ऋषिकेश** में पूज्यश्री का एकांतवास रहा।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी **हरिद्वार** में आयोजित वैशाखी पूनम-दर्शन व सत्संग-कार्यक्रम **(१४ से १७ मई)** सुदूर क्षेत्रों से आये भक्तों एवं पूर्णिमा-व्रतधारियों को अंतर्बाह्य शीतलता प्रदान कर गया। **‘पर हित सरिस धर्म नहिं भाई’** के सूत्र को जीवन में अपनाने पर जोर देते हुए पूज्यश्री बोले : ''जो अपने अधिकार की इच्छा नहीं रखता और दूसरे के भले में अपने अधिकार को अलविदा कर देता है, उसका अधिकार सुरक्षित और सुसंगत हो जाता है।'' □

> *''जिसकी बेवकूफी का, अज्ञान का, नासमझी का, अहंकार का अंत हुआ और अनंत से प्रीति हुई उसीको बोलते हैं ‘संत’।''* - पूज्य बापूजी

गरीब मजदूर दोपहर में सुबह का लाया ठंडा भोजन करते हैं और उन्हें वायु आदि की तकलीफें घेर लेती हैं। इससे करुणासिंधु बापूजी का हृदय व्यथित हुआ और पूज्यश्री ने हॉटकेस (गर्म टिफिन) वितरण का देशव्यापी अभियान चलाया।

ग्वालियर (म.प्र.)
आगरा (उ.प्र.)
बैंगलोर (कर्नाटक)
अहमदाबाद (गुज.)
बरेली (उ.प्र.)
वाराणसी (उ.प्र.)

देश भर में गर्मी की छुट्टियों में आयोजित हो रहे हैं 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर'
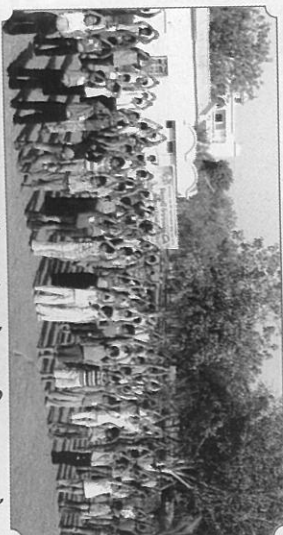
सूर्यनारायण को अर्घ्य देकर जीवनपोषक शक्ति प्राप्त करते बड़ौदा (गुज.) के बालक व सम्बलपुर (ओड़िशा) की बालिकाएँ।

'देव-मानव हास्य प्रयोग' करके आत्मिक आनंद में सराबोर होते जालना (महा.) के बच्चे व सूर्य-स्नान करके स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते जोधपुर (राज.) के बच्चे।
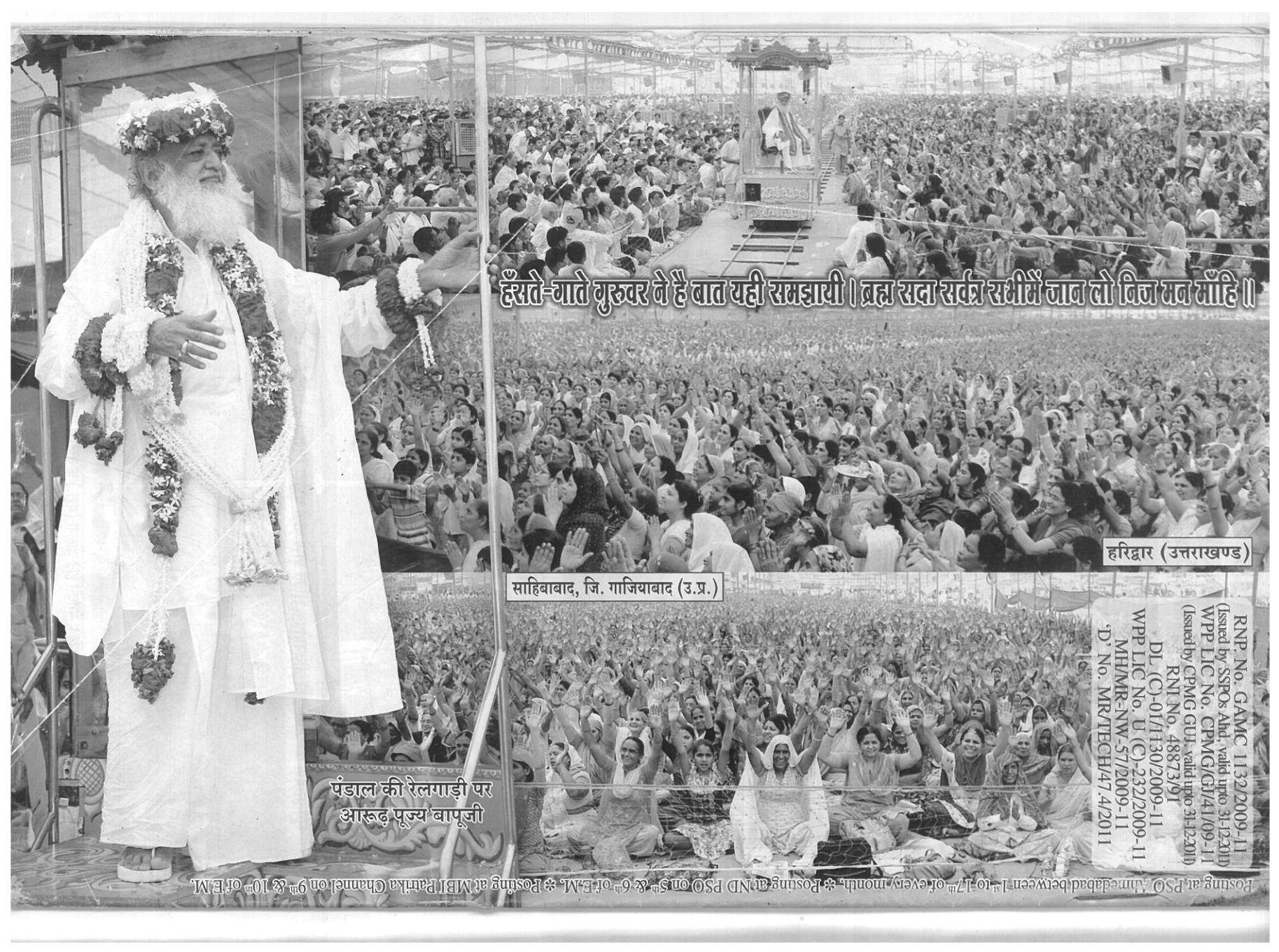
RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
'D' No. MR/TECH/47.4/2011

Posting at PSO Ahmedabad between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.